मैक्सिको की लोक कथाऐं

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title: Mexico Ki Lok Kathayen (Folktales of Mexico)
Cover Page picture: Somberero Hat from Mexico
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/indeed Indians' Basketx-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Mexico

विंडसर, कैनेडा

फरवरी 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
मैक्सिको की लोक कथाऐं 5
1 भालू राजकुमार 7
2 जिप्सी रानी 23
3 बन्द कमरा 29
4 रविवार सात 36
5 सफेद फूल 48
6 छोटा हरा खरगोश 57
7 क्लैमैन्सिया और जोस 70
8 जूँ की खाल का कोट 78
9 राक्षस का भेद 82
10 जुआन अल हैवन 90
11 छिपकली ने हिरन को दौड़ में कैसे पछाड़ा 95
12 क्विन्स पहाड़ियों की मुर्गी 101

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1200 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई 2018

मैक्सिको की लोक कथाऐं

संसार में सात महाद्वीप हैं – एशिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, अन्टार्कटिका, यूरोप और आस्ट्रेलिया – सबसे बड़े से सबसे छोटा। जब तक पनामा कैनाल[1] नहीं बनी थी, यानी **1914** तक, उससे पहले से यानी जबसे इसे **1492** में कोलम्बस ने खोजा था तब तक उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका धरती का एक ही टुकड़ा थे।

धरती के इन दोनों हिस्सों को, यानी उत्तरी अमेरिका को और दक्षिणी अमेरिका को, **15**वीं शताब्दी के अन्त में क्रिस्टोफर कोलम्बस को खोजने का श्रेय मिला। उससे पहले के जो धरती के नक्शे मिलते हैं उनमें इन दोनों महाद्वीपों का कहीं कोई नामो निशान भी नहीं मिलता। इनकी खोज के बाद यहाँ यूरोप के देशों से लोग आ कर बसना शुरू हो गये। तब तक भी उत्तरी अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका दोनों एक ही महाद्वीप थे। इसके अलावा कैनेडा देश भी पहले उत्तरी अमेरिका में ही आता था। वह कोई अलग देश नहीं था।

अमेरिका या यू ऐस ए या स्टेट्स देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में स्थित है। उत्तरी अमेरिका महाद्वीप में तीन बड़े मुख्य देश हैं – उत्तर में कैनेडा, दक्षिण में मैक्सिको और बीच में यू ऐस ए या उत्तरी अमेरिका। कुछ और छोटे छोटे देश भी हैं इसमें जो मैक्सिको के आस पास है।।

पर ऐसा नहीं है कि यूरोप के देशों के लोगों के आने से पहले यहाँ कोई रहता हीं नहीं था। यहाँ पर यहाँ के आदिवासी लोग रहते थे। उनकी अपनी संस्कृति थी, उनका अपना रहने सहने का ढंग था, उनके अपने तौर तरीके थे और थीं उनकी अपनी बहुत सारी लोक कथाऐं। विदेशियों के आने के बाद बहुत कुछ खत्म हो गया। पहले यहाँ कई जनजातियाँ रहती थी।

मैक्सिको देश उत्तरी अमेरिका महाद्वीप का तीसरा सबसे बड़ा देश है। यहाँ धरती की बहुत पुरानी संस्कृति माया संस्कृति चारों तरफ फैली पड़ी है। यहाँ की भाषा स्पेनिश है। भाषा के कारण इसका साहित्य कम मिलता है फिर लोक कथाओं का तो कहना ही क्या। फिर भी वहाँ की कुछ लोक कथाऐं यहाँ दी जा रही हैं।

आशा है तुम सब लोगों को ये कथाऐं पसन्द आयेंगीं और मैक्सिको के बारे कुछ जानकारी देंगीं।

---

[1] Panama Canal, 110 feet wide, 48 mile long canal, separates North America and South America continents and facilitates the transportation between Atlantic and Pacific oceans saving about 8,000 mile journey around the Cape Horn of South America. It took 10 years to be built, 1904-1914. It was opened to public in 1914.

संसार के सात महाद्वीप

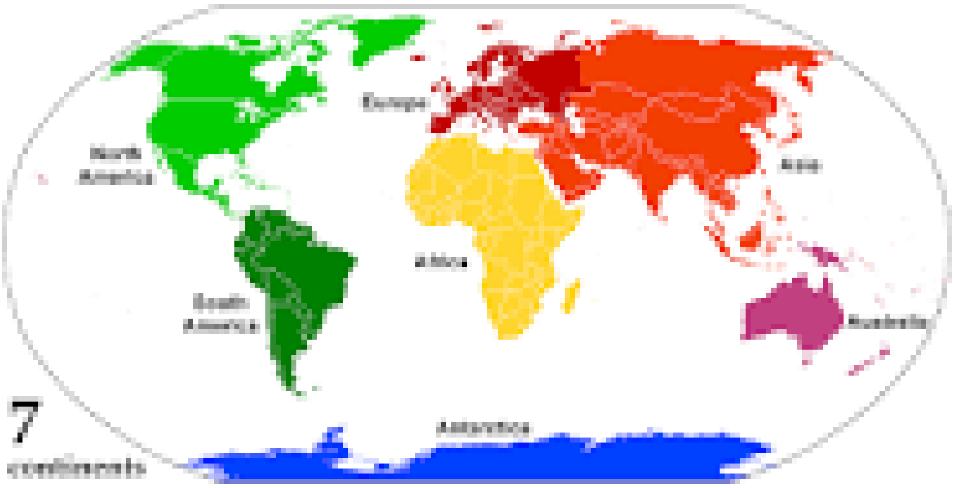

1 भालू राजकुमार[2]

भालू राजकुमार की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के मैक्सिको देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं से चुनी है।

बच्चो तुम लोगों ने मेंढक राजकुमार की कहानी तो पढ़ी होगी जिसमें एक परी ने एक राजकुमार को शाप दे कर एक मेंढक बना दिया था और कहा था कि "तुम अपने असली रूप में तभी आओगे जब कोई लड़की तुमको चूमेगी।"

आज हम तुम्हें हम उसी से मिलती जुलती भालू राजकुमार की एक कहानी सुनाते हैं जो मेक्सिको में कही सुनी जाती है।

---

[2] The Bear Prince (El Principe Oso) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/oso.html
Adopted, retold and written by Doris M Vazquez
The classical form of "El Principe Oso' (the Bear Prince) is the story of "Cupid and Psyche," which was first told by Apuleius in his narrative "The Golden Ass". It was retold in the 19th century by Walter Pater in Marius the Epicurean. This classical form of the tale, however, does not represent the original form from which the modern European versions are derived. This version is even farther from the original, since it is actually a compilation of two entirely different types of stories, Aarne-Thompson's Types 425 C and 325.

"Cupid and Psyche" has been known in literary circles for more than two thousand years. This tale is reported in every part of Europe. In the Western half, several countries have reported more than fifty versions. In Italy alone sixtyone oral variants have been recorded. This tale, recorded by Keightley, later was mentioned by Wilford in his Asiatic Researches, Vol.1X, p. 147. The same version later received much more scholarly treatment in Weber's Indische Studien, Vol. XV, pp. 252 et seq. In 1926 Edgerton in his Vikrama's Adventures, Harvard Oriental Series, Vol. XXV1, pp.263-66, edited and translated into English a version from the three known texts.

This tale may be compared to – Aarne-Thompson: Types 425A; 425C and tentatively 325; Apuleius: "Cupid and Psyche"; A.M. Espinosa: Tale 127; G Basile: Day 11, Tale 5; Grimm: Tale 88.

बहुत दिन पहले की बात है कि मेक्सिको देश के एक गॉव में एक लकड़हारा रहता था। उसके तीन सुन्दर बेटियॉ थीं। इन तीनों बेटियों में उसकी सबसे छोटी बेटी बहुत सुन्दर थी।

एक दिन वह लकड़हारा एक जंगल में लकड़ी काटने गया। वहॉ वह एक ओक का पेड़[3] काट रहा था कि एक बहुत ही बड़े और भयानक भालू ने उसके हाथ से उसकी कुल्हाड़ी छीन ली।

भालू उस लकड़हारे पर गुर्राया — "तुमको मेरे जंगल में से पेड़ काटने की इजाज़त किसने दी? तुम मेरी लकड़ी चुराते रहे हो अब तुम यहॉ से लकड़ी काटने की कीमत अपनी ज़िन्दगी से दो।"

वह गरीब लकड़हारा गिड़गिड़ाया — "मुझे माफ कर दीजिये मिस्टर ओसो[4]। मैं तो यह लकड़ी केवल बेचने के लिये ही काट रहा था ताकि मैं अपनी तीन छोटी छोटी बेटियों का पेट भर सकूँ। अगर आप मुझे मार देंगे तो मेरी तीनों बेटियॉ भूख से मर जायेंगी।"

यह सुन कर भालू सोच में पड़ गया फिर बोला — "तुम्हारे पास अपनी जान बचाने का केवल एक ही तरीका है। तुमको अपनी तीन बेटियों में से एक बेटी की शादी मुझसे करनी पड़ेगी।"

---

[3] Oak tree – a large shady kind tree

[4] Mister Oso – name of the Bear

यह सुन कर लकड़हारा तो भौंचक्का रह गया। उसकी कुछ समझ में नहीं आया कि वह क्या कहे या क्या करे। आखिर में उसने सोचा कि मरने से और अपनी बेटियों को अकेला छोड़ने से तो अच्छा यही है कि भालू की बात मान ली जाये।

सो वह लकड़हारा घर लौट आया और आ कर अपनी बेटियों को बताया कि उस दिन उसके साथ क्या हुआ। सुनते ही उसकी दो बड़ी बेटियॉ बोलीं — "हम तो भालू से शादी करने की बजाय मर जाना ज़्यादा पसन्द करेंगी पिता जी।"

निन्फ़ा[5] जो उसकी सबसे छोटी बेटी थी बोली — "पिता जी, उस भालू से शादी मैं करूँगी।"

अगले दिन वह लकड़हारा और उसकी सबसे छोटी बेटी निन्फ़ा दोनों जंगल गये। भालू वहॉ उनका इन्तजार कर रहा था। उस सुन्दर लड़की को देख कर वह भालू बहुत ही खुश हो गया।

निन्फ़ा उस भालू से बोली — "मिस्टर ओसो, मेरी मॉ ने मुझे हमेशा यही सिखाया कि सब चीज़ों में मुझे भगवान के नियम को ही मानना चाहिये। सो अगर मैं तुमसे शादी करूँगी तो कैथोलिक रीति रिवाज[6] के अनुसार ही करूँगी।"

भालू को इसमें कोई परेशानी नहीं थी। वह इस शर्त पर कि शादी कैथोलिक रीति रिवाज से ही होगी राजी हो गया पर इस शर्त

---

[5] Ninfa – name of the youngest daughter of the woodcutter

[6] Christians normally have three sects or branches – Catholics, Protestants and Orthodox. Catholics are older than the Protestants and are more conservative than Protestants.

के साथ कि उसके पादरी[7] को वहीं जंगल में ही आना पड़ेगा और उसकी शादी वहीं होगी।

सो वह लकड़हारा किसी पादरी को ढूँढने चला गया और जल्दी ही उसको ले कर वापस भी आ गया। उस पादरी ने उस भालू और निन्फ़ा की शादी करा दी।

शादी के बाद भालू निन्फ़ा को अपनी गुफा में ले गया। जब रात हुई तो भालू ने गाया —

वह भालू जो इतने बालों वाला है वह भालू जो इतना डराने वाला है
बदल जा एक सुन्दर और मन लुभाने वाले राजकुमार में बदल जा

और एक पल में ही वह भालू एक बहुत ही सुन्दर राजकुमार बन गया। उसने निन्फ़ा से कहा — "मैं एक जादू का राजकुमार हूँ। मुझे एक बुरी जादूगरनी[8] ने अपने जादू से दिन में भालू और रात में आदमी बना रखा है।

तुम यहाँ पर कुछ भी कर सकती हो पर एक शर्त पर कि तुम यह किसी को यह नहीं बताओगी कि मैं एक जादू डाला गया राजकुमार हूँ।"

निन्फ़ा उस भालू को राजकुमार के रूप में देख कर बहुत खुश हुई और उसने राजकुमार से वायदा किया कि वह यह भेद किसी को नहीं बतायेगी।

---

[7] Priest, of course here the Catholic priest. Priest in Christians are like Pandit in Hindu and Kaazee in Muslims.

[8] Translated for the word "Witch"

अगली सुबह जब वे दोनों सो कर उठे तो राजकुमार ने फिर गाया —

राजकुमार जो इतना सुन्दर और मन को लुभाने वाला है
वह एक बालों वाले और डराने वाले भालू में बदल जा

और तुरन्त ही वह राजकुमार भालू में बदल गया।

दिन पर दिन बीतते गये। एक दिन निन्फ़ा के मन में यह इच्छा उठी कि वह अपने गाँव अपने घर जाये और अपने पिता और बहिनों से मिले पर वह नहीं जानती थी कि वह इस बात की इजाज़त राजकुमार से कैसे ले।

पर आखिर उसने हिम्मत बटोर कर राजकुमार से कह ही दिया — "प्रिये, तुम्हारे अलावा मेरा यहाँ और कोई नहीं है जिससे मैं बात कर सकूँ। मेरी बहुत इच्छा है कि तुम मुझे मेरे गाँव जाने और मेरे परिवार से मिलने की इजाज़त दे दो।

मेरा गाँव यहाँ से बहुत दूर नहीं है। अगर मैं सुबह जल्दी ही यहाँ से चल दूँगी तो अँधेरा होने से पहले पहले ही यहाँ वापस भी आ जाऊँगी।"

हालाँकि राजकुमार निन्फ़ा को जाने तो नहीं देना चाहता था पर फिर उसकी जिद देख कर उसने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

पर उसने जाने के समय उसको फिर से याद दिला दिया कि वह अपना किया हुआ वायदा न भूले यानी कि वह अपने पति का भेद किसी पर भी न खोले।

निन्फ़ा ने कहा कि वह अपना वायदा याद रखेगी।

अगले दिन निन्फ़ा सुबह सवेरे जल्दी उठी और अपने बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहन कर अपने पिता और बहिनों से मिलने चली गयी। उसके पिता और बहिनों ने जब उसे देखा तो वे सब उसको देख कर बहुत खुश हुए और उसका स्वागत किया।

शैतान तो कभी सोता नहीं सो उसने निन्फ़ा की बहिनों के दिल में निन्फ़ा के लिये जलन पैदा कर दी।

उन्होंने जल्दी ही निन्फ़ा का मजाक बनाना शुरू कर दिया क्योंकि निन्फ़ा बहुत बढ़िया कपड़े और कीमती जवाहरात पहने थी। उसकी बहिनें उसको यह कह कह कर बार बार कोंचती रहीं कि कितने शरम की बात है कि उसने एक भालू से शादी की है।

उसकी बहिनों ने यह इतनी ज़्यादा बार कहा कि निन्फ़ा को गुस्सा आ गया और उसने अपने पति का भेद उनको बता दिया। यह सुन कर उसकी बहिनें तो बहुत ही आश्चर्य में पड़ गयीं।

उसकी सबसे बड़ी बहिन बोली — "तो निन्फ़ा तुम उस राजकुमार का जादू हटा क्यों नहीं देतीं? तुमको इसके लिये जो कुछ करना है वह तो बहुत आसान है।

तुम आज की रात उसको खूब पिलाओ। और पी कर जब वह सो जाये तो उसको बाँध दो और किसी चीज़ से उसका मुँह बन्द कर दो।

जब वह सुबह जागेगा तो वह अपने जादुई शब्द बोल ही नहीं सकेगा और उसका जादू टूट जायेगा। तब तुमको अपना पति हमेशा के लिये आदमी के रूप में मिल जायेगा।"

रात को निन्फ़ा जब अपनी गुफा में लौटी तो उसने अपने पति के साथ वही सब कुछ किया जो उसकी बहिनों ने उसको बताया था।

सो अगली सुबह जब राजकुमार सो कर उठा तो ज़रा उसका आश्चर्य तो देखो। उसने देखा कि वह तो बँधा हुआ है और उसका मुँह भी बन्द है। वह अपने वे जादुई शब्द न कह सका और उसका जादू वाकई टूट गया।

राजकुमार निन्फ़ा से बोला — "प्रिये, तुमने अपना वायदा तोड़ा है इसलिये उसका फल तो तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।

जादू तोड़ने के लिये और उसके बाद हमेशा खुशी से रहने के लिये हम दोनों को एक साल और एक दिन खुशी खुशी रहना चाहिये था पर क्योंकि वह समय अभी पूरा नहीं हुआ था इसलिये अब मुझे यहाँ से जाना पड़ेगा।

इसके अलावा क्योंकि तुमने मेरा कहना नहीं माना इसलिये तुमको मुझे ढूँढना भी पड़ेगा। और तुमको मुझसे पहले "विश्वास के किले"[9] को ढूँढना पड़ेगा।"

यह कहने के बाद राजकुमार गायब हो गया और निन्फ़ा वहाँ अकेली रह गयी। वह रो पड़ी। वह बहुत दुखी थी क्योंकि वह राजकुमार को सचमुच ही बहुत प्यार करती थी।

इसलिये वह राजकुमार से फिर से मिलने के लिये तैयार हो गयी और उसने "विश्वास का किला" ढूँढने का इरादा कर लिया। उसने अपनी कुछ चीज़ें बाँधी, उनको अपने कन्धे पर लटकाया और चल दी।

वह चलती रही और चलती रही और आखिर एक जंगल में आ पहुँची जहाँ एक जादूगर[10] रहता था। जादूगर ने उससे पूछा — "बेटी, तुम इस जंगल में क्या करने आयी हो?"

निन्फ़ा बोली — "मैं "विश्वास के किले" की तलाश में यहाँ आयी हूँ। क्या तुम्हें मालूम है कि वह कहाँ है?"

जादूगर बोला — "नहीं, मुझे तो नहीं मालूम कि "विश्वास का किला" कहाँ है पर तुम इस सड़क पर चली जाओ। इस पर चल कर तुम मेरे पिता के घर पहुँच जाओगी। शायद उनको पता हो कि "विश्वास का किला" कहाँ है।

[9] Castle of Faith

[10] Translated for the word "Wizard"

और लो यह गिरी[11] साथ लेती जाओ। अगर तुम किसी मुश्किल में फँस जाओ तो इसे तोड़ लेना।"

निन्फ़ा ने उस बूढ़े जादूगर से गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और उसकी बतायी हुई सड़क पर आगे बढ़ गयी। आखिर वह उस जादूगर के पिता के घर आ पहुँची।

उसने उससे पूछा कि क्या वह "विश्वास का किले" का पता जानता था? उसको भी उस किले का पता मालूम नहीं था पर वह बोला — "देखो, तुम इस सड़क पर चली जाओ तो तुम मेरे सबसे बड़े भाई के घर पहुँच जाओगी। वह बहुत जगह घूमा है। वह तुम को बता सकता है कि "विश्वास का किला" कहाँ है।

मैं तुमको एक गिरी और देता हूँ जैसे कि मेरे बेटे ने तुम्हें दी है। अगर तुम अपने आपको किसी मुश्किल में पाओ तो इसे तोड़ लेना। यह तुम्हारी सहायता करेगी।"

निन्फ़ा ने उससे भी गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और वहाँ से भी चल दी और चलते चलते तीसरे जादूगर के घर आ पहुँची। इत्तफाक से उसको भी "विश्वास के किले" का पता नहीं मालूम था पर उसने उसको यह बताया कि उसको क्या करना है।

[11] Nut – see its picture above

वह बोला — “शायद चॉद को उसका पता हो सो तुम इस सड़क पर चली जाओ वहॉ तुमको उसका घर मिल जायेगा। पर ख्याल रखना कि चॉद बहुत जल्दी गुस्सा हो जाता है।

मैं भी तुमको एक गिरी देता हूँ अगर तुमको लगे कि तुम किसी मुश्किल में हो तो इस गिरी को तोड़ लेना। यह तुम्हारी सहायता करेगी।”

निन्फ़ा ने उससे भी गिरी ली, उसको धन्यवाद दिया और वहॉ से भी चल दी। इतना चलते चलते वह बहुत थक गयी थी पर फिर भी वह उस रात किसी तरह चॉद के घर आ पहुँची।

उसने चॉद के घर का दरवाजा खटखटाया तो एक बूढ़ी स्त्री ने दरवाजा खोला और बाहर आयी। वह चॉद के घर की देखभाल करने वाली थी।

वह बोली — “हे भगवान, दया करो। बेटी, तुम यहॉ क्यों आयी हो? क्या तुमको यह नहीं मालूम कि अगर चॉद ने तुमको देख लिया तो वह तुमको खा जायेगा।”

निन्फ़ा ने ऑखों में ऑसू भर कर जो कुछ भी उसके साथ हुआ था सब उसको बता दिया।

वह बूढ़ी स्त्री बोली — “ठीक है तुम इस ॲगीठी के पीछे छिप जाओ। जब चॉद आयेगा तो मैं उससे ऐसे ही बातों बातों में पूछूँगी कि वह “विश्वास के किले” का पता जानता है या नहीं।”

सुबह को चॉद वापस आया तो वह बहुत गुस्से में भरा हुआ था क्योंकि उसकी उॅगली में कॅटीली नाशपाती[12] का एक कॉटा घुस गया था।

चॉद रसोई में आया तो उसने अन्दर आते ही कहा — “मुझे यहॉ आदमी के मॉस की खुशबू आ रही है। या तो तुम उसको मुझे दे दो नहीं तो मैं तुमको ही खा जाऊॅगा।”

वह बूढ़ी स्त्री चिल्लायी — “हॉ हॉ खा लो। तुम तो पागल हो गये हो। क्योंकि ओवन में मैंने कुछ भुनने के लिये रखा है इसलिये तुमको लग रहा है कि वह आदमी का मॉस है? बैठो और खाना खालो ताकि तुम जल्दी से जा कर सो सको। तुम बहुत थक गये हो।”

चॉद खाना खाने बैठ गया और वह बूढ़ी स्त्री उससे बात करने लगी — “एक दिन यहॉ एक मादा उल्लू आयी थी तो मैं उसके साथ बात करने लगी तो वह कह रही थी कि उसने किसी “विश्वास के किले” के बारे में बातें सुनी हैं।

तुम तो बहुत सारी बातें जानते हो तो यह भी जानते होगे कि “विश्वास का किला” कहॉ है।”

---

[12] Prickly pear - There is s very well-known rhyme in Spanish about the moon eating prickly pears. This is perhaps a reference to it. Its English translation is –
“Yonder is the Moon, Eating her prickly pear
Throwing the peelings, towards the lake.”

चाँद बोला — "मैं तुमसे सच कहूँ तो यह तो मुझे भी नहीं मालूम कि "विश्वास का किला" कहाँ है। शायद सूरज को पता होगा।"

इतना कह कर चाँद तो सोने चला गया और वह बूढ़ी स्त्री निन्फ़ा से फुसफुसा कर बोली — "इससे पहले कि चाँद जाग जाये तुम जल्दी से उठो और सूरज के घर चली जाओ।

तुम इस सड़क पर चली जाओ तो तुम सूरज के घर पहुँच जाओगी। शायद वह जानता होगा कि "विश्वास का किला" कहाँ हैं।"

निन्फ़ा उठी और उस बूढ़ी स्त्री की बतायी हुई सड़क पर चल कर सूरज के घर तक आयी। उसने सूरज के घर का दरवाजा खटखटाया तो वहाँ भी एक और बूढी स्त्री ने दरवाजा खोला।

वह बोली — "आओ बेटी, तुम यहाँ क्या कर रही हो? क्या तुमको मालूम नहीं कि अगर सूरज ने तुमको देख लिया तो वह तुम को जला कर राख कर देगा?"

निन्फ़ा रो पड़ी और सुबकते सुबकते उसने अपनी सारी कहानी उस बुढ़िया को सुना दी। वे दोनों जब इस तरह से दुखी हो कर बात कर ही रही थीं कि घर एक तेज़ रोशनी से भर गया और सूरज अन्दर आया।

बेचारी निन्फ़ा। वह तो बस मरने के लिये तैयार हो गयी पर वह छोटी बूढ़ी स्त्री चिल्लायी — "ठहरो सूरज ज़रा ठहरो। यह

बेचारी "विश्वास के किले" को ढूँढ रही है। क्या तुमको मालूम है कि "विश्वास का किला" कहाँ है?"

सूरज बोला — "ओह, तो यह "विश्वास के किले" को ढूँढ रही है।" तब रोते रोते निन्फ़ा ने सूरज को अपनी कहानी सुना दी।

सूरज बोला — "मुझे मालूम है कि "विश्वास का किला" कहाँ है पर वह यहाँ से बहुत दूर है।

मैं तुमको अभी ले चलता पर अब बहुत देर हो गयी है। और तुम्हें तो मालूम है कि मुझे अँधेरा होने के बाद घर से निकलने की इजाज़त नहीं है।

पर देखो यहीं मेरे पास ही मेरा एक दोस्त रहता है – अल एयर[13] जो हवा है। वह तुमको ले जा सकता है। तुम इस रास्ते चली जाओ तो तुम अल एयर के घर पहुँच जाओगी। वहाँ जा कर उसको बोलना कि मैंने तुमको भेजा है।"

निन्फ़ा वहाँ से फिर चल दी और काफी दूर चलने के बाद हवा के घर आयी। उसने हवा का दरवाजा खटखटाया तो हवा चिल्लाया — "जो कोई भी है अन्दर आ जाओ।"

निन्फ़ा अन्दर घुसी और हवा को बताया कि उसको सूरज ने एक प्रार्थना के साथ भेजा है। हवा बोला — "वह प्रार्थना मैंने पूरी की चाहे वह जो कुछ भी हो।"

[13] El Aire – the Wind god

तब निन्फ़ा ने उसको बताया कि उसके साथ क्या क्या घटा है और वह "विश्वास के किले" अपने पति को ढूँढने जाना चाहती है। अल ऐयर बोला — "तुम चिन्ता न करो मैं तुमको वहाँ खुद ले कर जाऊँगा।"

निन्फ़ा अल ऐयर की पीठ पर बैठ गयी और पलक झपकने से भी कम समय में ही "विश्वास के किले" आ पहुँची।

अल ऐयर बोला — "यही है "विश्वास का किला"। ऐसा लगता है कि यहाँ तो कोई दावत हो रही है।"

सारे किले में बहुत सारी रोशनी हो रही थी और वायलिन और गिटार की आवाजें चारों तरफ गूँज रही थीं।

हवा बोला — "मुझे अब यहाँ से जाना होगा। भगवान की दुआ से सब कुछ ठीक हो जायेगा।" कह कर वह वहाँ से तेज़ी से भागा चला गया।

निन्फ़ा ने किले का दरवाजा खटखटाया तो एक नौकर ने दरवाजा खोला और निन्फ़ा से पूछा — "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

निन्फ़ा बोली — "मैं राजकुमार से मिलना चाहती हूँ।"

नौकर बोला — "आप उनसे इस समय नहीं मिल सकतीं क्योंकि उनकी अभी अभी शादी हुई है और वह अपनी नयी रानी के साथ नाच रहे हैं।

निन्फ़ा ने नौकर से प्रार्थना की — "अगर ऐसा है तो मेहरबानी करके मुझे अन्दर आने दो और यह रौनक देखने दो। मैंने ऐसी रौनक पहले कभी नही देखी।"

नौकर बोला — "ठीक है। मैं तुमको अन्दर जाने तो दे सकता हूँ पर एक शर्त पर। तुम वहॉ पर सावधान रहोगी कि नयी रानी तुम को न देख पाये।

क्योंकि तुमको यहॉ बुलाया नहीं गया है सो अगर नयी रानी ने तुमको यहॉ देख लिया तो वह बहुत नाराज होगी।"

इस तरह निन्फ़ा किले में घुसी। उसने अपने पति राजकुमार को अपने मेहमानों से घिरे हुए खाना खाते देखा।

वह एक दीवार से सीधी चिपक कर खड़ी हो गयी और वहॉ से राजकुमार का ध्यान अपनी तरफ खींचने की कोशिश करने लगी। पर वह तो अपना खाना ही खाता रहा और उसने तो उसकी तरफ देखा भी नहीं।

निन्फ़ा ने राजकुमार का ध्यान अपनी तरफ खींचने की इतनी ज़्यादा कोशिश की कि उसकी रानी ने उसको देख लिया। वह रानी एक चुड़ैल थी जिसने अपने जादू से राजकुमार को अपने प्यार में अन्धा करके उसके साथ शादी कर ली थी।

तब राजकुमार ने निन्फ़ा को देखा और उसको तुरन्त ही पहचान लिया। उसने अपने नौकरों को चिल्ला कर निन्फ़ा को अपने पास लाने के लिये कहा पर शोर में किसी ने उसकी बात ही नही सुनी।

उधर वह चुड़ैल जादूगरनी भी अपने नौकरों पर चिल्लायी — “उस भिखारिन को यहाँ से बाहर निकाल दो।”

उसके नौकर निन्फ़ा को बाहर निकालने ही वाले थे कि निन्फ़ा ने एक गिरी निकाल कर उसको तोड़ दिया।

एक पल में ही निन्फ़ा एक छोटा सा चूहा बन गयी और इधर उधर भागने लगी। जब उस जादूगरनी रानी ने निन्फ़ा को चूहा बनते देखा तो वह खुद एक बिल्ला बन गयी और उस चूहे के पीछे दौड़ी। चूहा तुरन्त ही खाने वाली मेज पर चढ़ गया और राजकुमार की प्लेट में जा कर बैठ गया।

वहाँ जा कर निन्फ़ा ने दूसरी गिरी तोड़ी तो वह चावल का एक दाना बन गयी और राजकुमार के खाने में खो गयी। वह बिल्ला भी तुरन्त ही एक मुर्गा बन कर उस प्लेट में कूदा और उसने राजकुमार की खाने की प्लेट से चावल खाने शुरू कर दिये।

अब निन्फ़ा ने तीसरी गिरी तोड़ी तो वह कायोटी[14] बन गयी और उस मुर्गे को एक ही कौर में तुरन्त ही खा गयी।

उसके बाद निन्फ़ा अपने पुराने रूप में आ गयी और राजकुमार से मिल गयी। राजकुमार उसको देख कर बहुत खुश हुआ। उसके बाद दोनों फिर खुशी से रहने लगे।

[14] Coyote (pronounced as “Kaa-yo-tee) is a small desert wolf – very common character of American Native Indians’ folktales.

2 जिप्सी रानी[15]

बहुत दिन पहले की बात है कि मेक्सिको में एक राजा रहता था। उसका एक बेटा था।

यह राजकुमार जब शादी के लायक हुआ तो उसने अपने माता पिता से कहा कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की से शादी करना चाहता है इसलिये उसको ढूँढने को लिये वह दुनियाँ घूमने जा रहा है।

सो वह राजकुमार राजमहल छोड़ कर दुनियाँ घूमने चल दिया और चलते चलते एक फव्वारे के पास आ पहुँचा। वहाँ वह पानी पीने के लिये रुका।

जैसे ही वह पानी पीने के लिये झुका तो उसको उस पानी में तीन सन्तरों की परछाईं दिखायी दी तो उसने ऊपर की तरफ देखा। उसने देखा कि एक पेड़ की डाली पर तीन सन्तरे लगे हुए थे।

[15] The Gypsy Queen (La Reina Mora) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/reina.html
Adopted, retold and written by Srita. Angela Ruiz
[See also "The Three Citrons," Day V, tale 9. RS Boggs has edited a small collection of Spanish tales in the book "Three Golden Oranges? Tale I is a variation of "La Reina Mora." Boggs, in his Index of Spanish Folktales, also refers to other variants on pp. 54, 55, 57, and 58..]

राजकुमार ने सोचा ये सन्तरे कितने मीठे और रसीले दिखायी देते हैं मैं इनको तोड़ लेता हूँ सो वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसने वे तीनों सन्तरे तोड़ लिये।

उसने पहले एक सन्तरा छीला और तोड़ा तो उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। निकलते ही वह राजकुमार से बोली मुझे रोटी चाहिये।

राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा फिर से साबुत हो गया।

राजकुमार ने दूसरा सन्तरा छील कर तोड़ा तो उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी सन्तरे में से निकल कर रोटी माँगी तो राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की भी उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा भी फिर से साबुत हो गया।

अब उस राजकुमार की समझ में कुछ कुछ आया तो उसने सोचा कि तीसरा सन्तरा तोड़ने से पहले उसको कहीं से रोटी ले लेनी चाहिये ताकि ऐसा न हो कि तीसरे सन्तरे में से निकल कर वह

लड़की भी रोटी माँगे और रोटी न मिलने की वजह से वह भी सन्तरे में गायब हो जाये।

वह राजकुमार अभी यह सब सोच ही रहा था कि वहाँ से एक जिप्सी गाड़ी में बैठा गुजर रहा था। उसको देख कर वह राजकुमार चिल्लाया — "नमस्ते। मुझे एक रोटी दे दो मैं तुमको उसके लिये एक सोने का सिक्का दूँगा।"

उस जिप्सी ने जल्दी से अपनी गाड़ी से उतर कर राजकुमार को रोटी दे दी। अब राजकुमार ने खुशी से सन्तुष्ट होते हुए तीसरा सन्तरा छीला और तोड़ा।

उसमें से भी पहले की तरह एक लड़की निकली। यह लड़की पहली दो लड़कियों से भी ज़्यादा सुन्दर थी। इसने भी निकलते ही राजकुमार से रोटी माँगी।

राजकुमार ने खुशी खुशी उसको रोटी दे दी। रोटी खा कर वह बोली — "अब मैं तुम्हारी हूँ बोलो मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकती हूँ।"

राजकुमार बोला — "मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

उस लड़की ने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था और क्योंकि राजकुमार शादी करने के लिये उसको अपने महल ले जाना चाहता था और इस हालत में वह उसको अपने घर नहीं ले जा सकता था। उसने जिप्सी के कपड़े देखे तो वे तो बहुत गन्दे थे।

सो राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम यहीं इस जिप्सी के पास ठहरो तब तक मैं तुम्हारे लिये कुछ कपड़े ले कर आता हूँ।

जिप्सी के भी एक बेटी थी जो गाड़ी में सो रही थी इसलिये वह यह सब नहीं देख पायी थी जो वहाँ हो रहा था। जब राजकुमार वहाँ से चला गया तब वह लड़की जाग गयी और उसने राजकुमार को जाते हुए देख लिया। राजकुमार को देखते ही वह उसको प्यार करने लगी।

वह तुरन्त ही गाड़ी में से कूद पड़ी और अपने पिता से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था। जिप्सी ने उसको सब कुछ बता दिया।

उस जिप्सी लड़की ने उस सन्तरे वाली लड़की को देखा तो वह उससे बोली — "लाओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ। इससे जब राजकुमार आयेगा तब तुम बहुत सुन्दर दिखायी दोगी।"

वह लड़की तैयार हो गयी। जैसे ही उस जिप्सी लड़की ने उस के बालों में कंघी करनी शुरू की अचानक ही उसने एक पिन उसके

सिर में चुभो दी। इससे तुरन्त ही वह लड़की एक फाख्ता के रूप में बदल गयी और उड़ गयी।

फिर उस जिप्सी लड़की ने अपने कपड़े उतार दिये और उस सन्तरे वाली लड़की की जगह बैठ गयी।

जल्दी ही राजकुमार कपड़े ले कर लौट आया तो उसने उस लड़की को देख कर उससे पूछा — “अरे तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?”

उस जादूगरनी ने जवाब दिया — “इस तेज़ धूप से मेरा रंग सॉवला पड़ गया है।”

राजकुमार ने उस जिप्सी लड़की का विश्वास कर लिया कि वह वही सन्तरे वाली लड़की थी और अब उसका रंग सॉवला पड़ गया था। वह उसको अपने महल ले गया और उससे शादी कर ली।

एक दिन एक फाख्ता राजा के बागीचे में आयी और वहॉ के माली से पूछा — “ओ राजा के माली, राजकुमार और उसकी पत्नी कैसे हैं?”

माली बोला — “कभी कभी तो राजकुमार गाते हैं पर अक्सर तो वह रोया ही करते हैं।” उसके बाद वह फाख्ता वहॉ बराबर आती रही और राजकुमार के बारे में पूछती रही।

एक दिन उस माली ने राजकुमार को उस फाख्ता के बारे में बताया तो राजकुमार ने माली को कहा कि अगली बार जब भी वह फाख्ता बागीचे में आये तो वह उसको पकड़ ले।

माली ने उस पेड़ पर जहॉ वह फाख्ता आ कर बैठती थी एक जाल बिछा दिया सो अगली बार जब वह फाख्ता वहॉ आयी और फिर वहॉ से उसने उड़ने की कोशिश की तो उड़ ही नहीं पायी। वह

तो माली के बिछाये जाल में फॅस गयी थी। माली उसको पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया।

राजकुमार को वह छोटी सी फाख्ता बहुत अच्छी लगी सो उसने उसको अपने हाथों में ले लिया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

जब वह उस फाख्ता के सिर पर हाथ फेर रहा था तो उसको उसके सिर में एक पिन महसूस हुई। उसने उस पिन को खींच कर बाहर निकाल दिया। जैसे ही उसके सिर से वह पिन निकली वह फाख्ता फिर से सन्तरे वाली लड़की बन गयी।

तब उसने राजकुमार को सारी कहानी बतायी और राजकुमार ने वह सारी कहानी राजा को सुनायी।

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उस जिप्सी को जला कर मारने की सजा सुना दी। राजकुमार और सन्तरे वाली लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

3 बन्द कमरा[16]

एक बार की बात है कि एक नीच जादूगर भिखारी के वेश में घर घर भीख माँगने जाया करता था और जहाँ भी उसको कोई सुन्दर लड़की दिखायी देती उसको पकड़ लाया करता था और फिर उनमें से कोई भी लड़की घर वापस नहीं पहुँचती थी।

एक दिन जब वह भीख माँगने गया तो उसने एक ऐसे घर का दरवाजा खटखटाया जहाँ एक बूढ़ा अपनी तीन सुन्दर बेटियों के साथ रहता था।

जब उसने उस बूढ़े के घर का दरवाजा खटखटाया तो उसकी सबसे बड़ी बेटी ने घर का दरवाजा खोला और उसको डबल रोटी का एक टुकड़ा दिया।

जब उस लड़की ने उसको वह रोटी का टुकड़ा दिया तो उस जादूगर ने उसका हाथ छुआ और उसके ऊपर जादू डाल दिया[17]।

---

[16] The Forbidden Chamber (La Camara Prohibida) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/camara.html
Adopted, retold and written by Srita Delia Servin
[Author's Note : This tale in appoximately this form is known over most of Europe from Germany eastward. Its area of greatest popularity is found in the Baltic States and in Norway. In the North, it seems to go no farther than the Urals, but it is found in Palestine and has several versions in India. It has also been reported by the Eskimos as well as by the natives of Puerto Rico. Aside from the Puerto Rican versions, I have not run across any versions in Latin America. This particular tale has never been thoroughly studied although Norway is considered an important center of dissemination of this tale, if not its original home.]

[17] Translated for the word "Hypnotized"

फिर उसने उसको अपनी टोकरी में बिठा लिया जो वह हमेशा अपनी पीठ पर लटकाये घूमता था।

उस टोकरी को ले कर वह जंगल की तरफ अपने घर चला और उस लड़की को वहॉ अपने घर में रख दिया। उस लड़की को वहॉ सब कुछ बहुत अच्छा लगा। उसे जो कुछ भी चाहिये था वह सब कुछ वहॉ मौजूद था।

कुछ दिन बाद जादूगर ने उस लड़की से कहा कि उसको किसी काम से बाहर जाना है सो वह घर की सारी चाभियॉ उसके पास छोड़ जायेगा।

वह उसकी गैरहाजिरी में किसी भी कमरे में जा सकती थी सिवाय एक कमरे के। क्योंकि अगर वह उस कमरे में गयी तो वह यकीनन ही मर जायेगी। फिर उसने उसको एक अंडा दिया और उसको ठीक से सॅभाल कर रखने के लिये कहा।

जैसे ही वह जादूगर अपने काम से बाहर चला गया उस लड़की ने घर के सारे कमरे खोल खोल कर देखने शुरू कर दिये। हर कमरे में उसको बहुत सुन्दर सुन्दर चीज़ें रखी मिलीं। उनको देख कर उसका दिल खुश हो गया।

आखीर में वह उस बन्द कमरे के पास आयी जिसको उस जादूगर ने उसे खोलने से मना किया था। एक पल को तो वह हिचकिचायी पर फिर वह उसको खोल कर देखने के लिये इतनी उत्सुक हो गयी कि आखिर उसने उसका ताला खोल ही दिया।

उस कमरे के अन्दर जो देखा तो उसको देख कर तो वह कॉप गयी। उस कमरे में सैंकड़ों लड़कियॉ थीं जिनको वह जादूगर उठा कर ले आया था और जो अब सोयी हुई सी लग रही थीं।

पहले तो वह लड़की यह सब देख कर बहुत डर गयी फिर वह वहॉ से निकल कर उससे जितनी तेज़ हो सकता था वहॉ से भाग गयी।

इस हबड़ा तबड़ी में उसका वह अंडा गिर गया जो उसको वह जादूगर सॅभाल कर रखने के लिये दे गया था। पर उसको यह देख कर बहुत आश्चर्य हुआ कि वह अंडा गिर कर भी टूटा नहीं।

उसने उसे उठाया तो उसने देखा कि वह लाल हो गया है। उस ने उसे साफ करने की कोशिश भी की पर वह वह साफ ही नहीं हुआ लाल ही रहा।

कुछ देर बाद जादूगर वापस आ गया। जादूगर ने देखा कि अंडे को कुछ हो गया था। यह देख कर उसका शक पक्का हो गया कि उस लड़की ने जरूर ही उस बन्द कमरे को खोला है।

उसने उस लड़की को खूब पीटा और घसीट कर उसी बन्द कमरे में ले जा कर उसको दूसरी लड़कियों के साथ वहीं बन्द कर दिया।

जादूगर वापस फिर उसी लड़की के घर गया और उस बूढ़े की दूसरी बेटी को भी उठा लाया। उसने उसके साथ भी उसने वही किया जो उसने उसकी बड़ी बहिन के साथ किया था।

वह उसके घर फिर गया और उस बूढ़े की तीसरी बेटी को भी उठा लाया। पर उसकी यह बेटी बहुत होशियार थी।

जादूगर ने इस लड़की के साथ भी यही चाल खेलने की कोशिश की। उसने इस लड़की को भी कहा कि वह घर के बाहर जा रहा है। फिर उसने उसको घर की सब चाभियाँ और अंडा दिया और केवल एक कमरे को न खोलने के लिये कहा।

जब जादूगर उसको घर की सब चाभियाँ और अंडा दे कर चला गया तो अंडा तो उसने एक आलमारी में उठा कर रख दिया और चाभियाँ ले कर वह उस बन्द कमरे की तरफ चली।

वह भी उस कमरे में इतनी सारी लड़कियों को सोते देख कर आश्चर्य में पड़ गयी। पर वहाँ उसने उसमें अपनी दोनों बहिनों को पहचान लिया।

उस समय तो उसने दरवाजा बन्द कर दिया और वहाँ से चली आयी। जब उसने जादूगर के लौट कर आने की आवाज सुनी तो उसने उसकी चाभियाँ और अंडा उठाया और उसके पास चल दी।

जादूगर वह चाभियाँ और अंडा सही सलामत पा कर बहुत खुश हुआ और उससे बोला — "तुम मेरी पत्नी बनने के लायक हो क्योंकि तुमने मेरा कहना माना और उस कमरे को खोलने की अपनी उत्सुकता को दबा कर रखा।"

उस लड़की के इस अंडे और चाभियों को इस तरह से ठीक से लौटाने ने जादूगर का जादू तोड़ दिया। जैसे ही उस लड़की ने उस

जादूगर का जादू तोड़ा तो उस जादूगर की ताकत भी चली गयी। अब वह लड़की उसके साथ जो चाहे कर सकती थी क्योंकि अब वह जादूगर नहीं रहा था एक साधारण आदमी हो गया था।

उसने जादूगर की चाभियाँ लीं और उस बन्द कमरे में गयी और उसने सारी सोती हुई लड़कियों को जगा दिया। फिर वह जादूगर के पास गयी और उससे बोली — "इससे पहले कि तुम मुझसे शादी करो तुम मेरे माता पिता को एक टोकरी भर कर सोना दे कर आओ।"

उस लड़की ने एक बड़ी सी टोकरी ली और उसमें अपनी दोनों बहिनों को रखा। फिर उनको सोने से ढक कर वह जादूगर से बोली — "लो यह टोकरी ले कर मेरे माता पिता के पास चले जाओ और उनको यह सोना दे आओ। और देखो सड़क पर बीच में कहीं भी रुकना नहीं क्योंकि मैं तुमको यहाँ खिड़की से देखती रहूँगी।"

जादूगर उस टोकरी को ले कर उस लड़की के घर चला पर थोड़ी ही देर में वह थक गया तो सुस्ताने के लिये बैठ गया। पर तभी उसने एक आवाज सुनी — "मैं तुमको खिड़की से देख रही हूँ। तुम बैठो नहीं बस चलते जाओ।"

उसको लगा कि यह उसकी होने वाली पत्नी की आवाज है सो वह उठ बैठा और फिर से चलने लगा। पर जब भी वह सुस्ताने के लिये रुकता तभी उसको वह आवाज सुनायी पड़ती सो वह फिर चलने लगता।

आखिर वह अपनी होने वाली पत्नी के माता पिता के घर पहुँच गया। वह टोकरी उसने वहीं दरवाजे पर ही छोड़ दी और वापस अपने घर चल दिया।

इस बीच में उस लड़की ने कार्डबोर्ड का एक टुकड़ा लिया और उसका अपने सिर जैसा एक सिर बना लिया और उसको दूसरी मंजिल की खिड़की के पत्थर पर रख दिया। इससे ऐसा लग रहा था जैसे उस जादूगर को कोई खिड़की में से देख रहा हो।

इसके बाद वह उस बन्द कमरे में गयी और दूसरी सब लड़कियों को आजाद किया और उन सबको अपनी शादी में बुलाया।

फिर उसने अपने सारे शरीर को पंखों से ढक लिया जैसे कि वह कोई बहुत ही नयी सी चिड़िया हो ताकि कोई उसको पहचान न सके और वह घर से बाहर निकली।

घर से बाहर निकल कर वह अपने उन मेहमानों से मिली जिनको उसने अपनी शादी में बुलाया था। मेहमानों ने उससे पूछा — "ओ सुन्दर चिड़िया तुम कहाँ से आयी हो?"

वह लड़की बोली — "मैं उस घर से आयी हूँ जहाँ जादूगर की शादी हो रही है।"

उन्होंने फिर पूछा — "हमें भी तो बताओ कि उसकी सुन्दर दुलहिन क्या करती है?"

"वह शादी की सुन्दर पोशाक पहन कर खिड़की से बाहर झाँकती है।"

जब जादूगर घर लौटा तो उसने देखा कि उसके घर की दूसरी मंजिल की खिड़की खुली है। उसने ऊपर देखा तो उसको उस लड़की का वह कार्डबोर्ड का बनाया हुआ सिर दिखायी दिया।

उसको लगा कि वह उसकी होने वाली पत्नी का सिर है सो वह परेशान हो कर घर के अन्दर भागा तो वहाँ तो उस लड़की की बहिनें और पूरा परिवार मौजूद था।

वे सब मिल कर उसको उसी बन्द कमरे में घसीट कर ले गये। उस कमरे को ताला लगा दिया और उसमें आग लगा दी।

इस तरह उस लड़की ने उस जादूगर और उसके बन्द कमरे का अन्त किया।

4 रविवार सात[18]

यह बहुत पुरानी बात है कि एक बार मैक्सिको के एक गॉव में दो कुबड़े[19] रहते थे। एक बहुत दयालु किस्म का था और दूसरा कुछ नीच किस्म का था।

वे दोनों कुबड़े गॉव में काम नहीं कर सकते थे क्योंकि गॉव में हर आदमी इनका बहुत मजाक बनाता था जो उनको अच्छा नहीं लगता था इसलिये वे गॉव में काम न करके पहाड़ियों पर जा कर लकड़ी काटने काम करते थे।

इन दोनों के पहाड़ियों पर जा कर लकड़ी काटने का मतलब यह था कि दयालु कुबड़ा तो बेचारा सारा दिन लकड़ी काटता था और नीच कुबड़ा सारा दिन घर बैठा आलस में गुजारता था।

---

[18] Sunday Seven (Domingo Siete) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold and written by Sra Camen F de Cordova
[Author's Note : This tale "Domingo Siete" is one of Mexico's best known tales. Any malapropism made by a Mexican will draw the comment, "y salio con su Domingo Siete" (he came out with his Sunday Seven), meaning that he has said or done something foolish. Stith Thompson in *The Folktale*, p. 49, states that in its present form the tale was recorded as early as the 17th century in the literature of both Italy and Ireland, and that earlier there had been an Arabic literary story dating from the 14th century in which a demon or afrit removes the hump from the hero and puts it on a second man, the villain.]

[19] Translated for the word "Hunchback" – a man or a woman with the hump somewhere on his or her body.

वह उस दयालु कुबड़े से कहता — "ए देखो न आज मैं कितना बीमार हूँ। कितना अच्छा हो अगर इस हफ्ते तुम जा कर लकड़ी काट आओ।"

अब क्योंकि उसका साथी दयालु था सो वह बेचारा पहाड़ी पर चला जाता और हर हफ्ते इसी तरह काम करता रहता।

एक दिन की बात है कि जब वह नीच कुबड़ा घर में आराम कर रहा था उस दयालु लकड़हारे ने बहुत काम किया और थक गया। क्योंकि उसका घर वहाँ से काफी दूर था सो उसने वहीं पास के एक झरने के पास ही रात बिताने की सोची।

उसने अपना तम्बू लगाया और उसके अन्दर जा कर सो गया। आधी रात को उसे किसी के गाने की आवाज सुनायी पड़ी।

पहले तो उसने सोचा कि शायद किसी ने उसके पास अपना कैम्प लगाया होगा पर जब उसने वह गाना सुना तो उसे महसूस हुआ कि वह आवाज तो आदमी की नहीं थी।

वह बड़ी सावधानी से उठा और चुपचाप उस तरफ चला जहाँ से वह गाने की आवाज आ रही थी। जरा सोचो तो कि उसको कितना आश्चर्य हुआ होगा जब उसने देखा कि परियों का एक झुंड आग के चारों तरफ नाच गा रहा है।

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन

वे परियाँ बस यही गा रही थीं। वे इसी लाइन को बार बार दोहराये जा रही थीं। ऐसा लगता था जैसे बस उनको यही एक लाइन आती थी और यही एक गाना आता था।

यह सब देख कर उस लकड़हारे ने निश्चय किया कि वह उनसे बात जरूर करेगा। सो जैसे ही उन्होंने फिर से गाना शुरू किया तो वह आदमी उनके पास जा पहुँचा। उन लोगों ने उसको देख लिया।

परियों ने उससे पूछा — "ओ धरती के आदमी, तुमको क्या चाहिये? तुम हमको परेशान करने के लिये यहाँ क्यों आ गये?"

लकड़हारा बोला — "मैं यहाँ तुमको परेशान करने के लिये नहीं आया। मैं तो बल्कि इसलिये आया हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।

तुम मुझे सुनो और फिर तुम देखोगी कि तुम्हारा यह गीत जो तुम इस समय इस तरह से ज़्यादा अच्छा लगेगा।"

यह कह कर उसने गाया –

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
गुरुवार और शुक्रवार और शनिवार छह

यह सुन कर वे परियाँ तो बहुत ही खुश हो गयीं। फिर उन्होंने देखा कि वह लकड़हारा तो कुबड़ा है। उन्होंने उसको घुटनों के बल बैठने के लिये कहा और अपनी जादू की छड़ी उसके कूबड़ पर छुआ दी।

अब क्या था। जैसे ही उनकी वह जादुई छड़ी उसके कूबड़ को छुई कि उसका कूबड़ तो चला गया और वह बहुत ताकतवर भी हो गया।

पर तभी एक डरावनी आवाज के साथ अचानक धरती हिलने लगी और पत्थर ज़ोर ज़ोर से लुढ़कने लगे। परियाँ लकड़हारे से चिल्ला कर बोलीं — "राक्षस[20] आ रहे हैं। जल्दी करो पेड़ पर चढ़ जाओ नहीं तो वे तुमको मार देंगे।"

इतना कह कर वे परियाँ गायब हो गयीं।

पलक झपकते ही लकड़हारा पेड़ पर चढ़ गया और उसके पत्तों के पीछे छिप गया। जैसे ही वह पेड़ पर ठीक से बैठा वैसे ही तीन बदसूरत और बहुत बड़े राक्षस उसी पेड़ के नीचे आ पहुँचे और आपस में बात करने लगे।

वे आपस में पूछने लगे — "दोस्तों, इस साल में तुम लोगों ने कौन कौन सा बुरा काम किया।"

एक बोला — "अबकी बार मैंने सारे गाँव को अन्धा कर दिया और अब वे इतने अन्धे हो गये हैं कि अब तो उनको सूरज भी दिखायी नहीं दे सकता।" यह सुन कर वे सब एक दूसरे की पसलियों में उँगली गड़ा गड़ा कर हँसने लगे।

[20] Translated for the word "Ogre" – an ogre (feminine ogress) is a being usually depicted as a large, hideous, manlike monster that eats human beings.

दूसरा राक्षस बोला — "आहा, क्या तुम समझते हो कि यह कोई काम था? तुम लोग अगर मेरा काम सुनोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि काम क्या होता है। सुनो।

मैंने तो अपने राज्य के लोगों को बिल्कुल ही शान्त कर दिया है। और अब तो वे इतने गूँगे हो गये हैं कि उनके बच्चे तो अब रो भी नहीं सकते।"

सारे राक्षस मिल कर फिर ज़ोर से हँस पड़े।

अब तीसरा राक्षस बोला — "मैं भी कोई चुपचाप नहीं बैठा। मैंने अपने लोगों को इतना बहरा बना दिया है कि उनको तो अब नरक में पड़ी आत्माओं के रोने की आवाज भी सुनायी नही देगी।"

और सारे राक्षस मिल कर फिर और ज़ोर से हँस पड़े।

वे इन सब बातों को सुन कर खुशी के मारे जमीन पर लोट पोट हो रहे थे। वे इतने नीच थे कि उन आदमियों को दुखी करके उनको इतनी खुशी हो रही थी।

बेचारा लकड़हारा पेड़ के ऊपर बैठा यह सब सुन सुन कर डर के मारे कॉप रहा था।

इतने में पहला राक्षस बोला —"अगर तुम लोगों ने ऐसा ही किया है जैसा कि मैंने कहा है तब सब कुछ ठीक चल रहा है।

वे बदकिस्मत लोग जिनको मैंने अन्धा किया है वे बेचारे तो यह भी नहीं जानते कि वे ठीक भी हो सकते हैं। फिर भी तुम लोग यह

मत समझना कि मैं उनको ठीक करने जा रहा हूँ और मैं उनको ठीक करने की तरकीब तो बिल्कुल ही नहीं बताने वाला।"

दूसरा राक्षस बोला — "बहुत अच्छे। पर वह तरकीब तुम हम लोगों को तो बताओगे न? और मुझे पूरा यकीन है कि हमारा यह दोस्त भी अपने लोगों के गूँगेपन की दवा जरूर जानता होगा।"

तीसरा राक्षस बोला — "तुम ठीक कहते हो। मेरे पास भी एक तरकीब है जिससे वे गूँगे लोग फिर से बोल सकते हैं।"

पहला राक्षस बोला — "मेरे लोगों के अन्धेपन को ठीक करने के लिये किसी को बस यही करना है कि अप्रैल के पहले हफ्ते की ओस में अपनी उँगली डुबो कर उनकी आँखों में मले तो उनकी आँखों की रोशनी वापस आ सकती है।"

दूसरा राक्षस बोला — "तुमको अपने इस भेद को ठीक से छिपा कर ही रखना चाहिये क्योंकि तुम्हारा यह भेद बहुत ही कीमती भेद है।

पर अब तुम मेरे इलाज के बारे में भी तो सुनो। जैसा कि मैंने तुमसे कहा कि मैंने अपने लोगों को बहरा कर दिया है। क्या तुमको यह पता है कि वे कैसे ठीक हो सकते हैं? इस बहरेपन का इलाज तुम्हारे अन्धेपन के इलाज से कहीं मुश्किल का काम है।

तुम लोगों ने घंटों वाली पहाड़ी[21] का नाम तो सुना ही है। उन अन्धों को बस यही करना है कि अन्धे आदमी को उस पहाड़ी पर ले

[21] Hill of the Bells

जाना है, उसको चट्टान के सहारे खड़ा करना है और फिर उस चट्टान को हथौड़े से मारना है। उस चट्टान से निकली हुई आवाज से ही उसका बहरापन ठीक हो जायेगा।"

तीसरा राक्षस बोला — "यह तो कुछ भी नहीं। मेरे आदमियों का गूँगापन ठीक करने के लिये किसी को खेतों में जाना चाहिये और वहाँ जा कर सैनीज़ो[22] पौदे के फूल चुनने चाहिये जो काफी बारिश के बाद ही फूलते हैं।

इन फूलों को उबाल कर उसकी चाय बनानी चाहिये और वह चाय उस गूँगे को पिला देनी चाहिये। इससे न केवल उसका गूँगापन ही ठीक हो जायेगा बल्कि उसकी और दूसरी बीमारियाँ भी ठीक हो जायेंगी।"

इस तरह बात करते करते वे राक्षस आपस में आनन्द कर रहे थे कि सुबह होने का समय हो आया। उन लोगों ने आपस में अगले साल इसी दिन फिर मिलने का वायदा किया और वहाँ से चले गये।

जैसे ही वे राक्षस वहाँ से गये वह लकड़हारा अपने मन में यह कहते हुए तुरन्त ही उस पेड़ से नीचे उतर आया कि क्योंकि परियों ने मेरे ऊपर दया की है तो मुझे भी उनकी दया का बदला दया से ही देना चाहिये।

---

[22] Flowers of Cenizo plant – see its picture above.

मैं अभी जाऊँगा और उन दुखी लोगों को ठीक करूँगा जिनकी अभी राक्षस लोग बात कर रहे थे। अप्रैल का महीना तो अभी दूर है इसलिये मैं पहले जा कर बहरों और गूँगों ठीक करता हूँ।

सो चलते चलते वह उस गाँव में पहुँच गया जिसमें गूँगे लोग रहते थे। उसने सैनिज़ो के फूल चुने, उनकी चाय बनायी और उन सब गूँगे लोगों को पिला दी।

उस चाय को पीते ही उन सबकी बोलने की ताकत तुरन्त ही वापस आ गयी और वे पूरी तरीके से स्वस्थ हो गये क्योंकि उनकी दूसरी बीमारियाँ भी उस चाय को पीने से ठीक हो गयी थीं।

वे लोग उस लकड़हारे के इतने ज़्यादा खुश हुए कि उन्होंने उस लकड़हारे के छोटे से गधे पर जितना लाद सकते थे उतना सोना और चाँदी लाद दी।

यहाँ से अपना काम खत्म करके वह लकड़हारा फिर बहरों के गाँव की तरफ चल पड़ा। वहाँ उन बहरों को ले कर वह घंटों की पहाड़ी पर चला गया। वहाँ उनको चट्टान के सहारे खड़ा कर करके उसने उस चट्टान को हथौड़े से मारा तो उसकी आवाज से उनका बहरापन ठीक हो गया।

यहाँ भी ये बहरे लोग उससे इतने खुश हुए कि उन्होंने भी उस का गधा सोने चाँदी से लाद दिया।

इस सबको करने के बाद अब अप्रैल का महीना पास आ रहा था सो वह अब अन्धों के गाँव की तरफ चल दिया। वह एक घास

से भरे मैदान में डेरा डाल कर रहने लगा। वह वहाँ अप्रैल के पहले हफ्ते का इन्तजार कर रहा था।

जब अप्रैल का पहला हफ्ता आया तो उस लकड़हारे ने उन फूलों पर पड़ी काफी सारी ओस इकट्ठी कर ली और अन्धों के गाँव में घुसा और उसको सबकी आँखों पर लगा लगा कर उनकी आँखों की रोशनी वापस ले आया।

आँखों की रोशनी पा कर वे सब इतने खुश हुए कि उन्होंने उसको पिछले गाँव वालों से भी ज़्यादा सोना और चाँदी दिया।

यह सब करके वह अपने घर लौट आया जहाँ उसका वह जलने वाला दोस्त उसका इन्तजार कर रहा था।

उस दयालु लकड़हारे ने उसको अपना सारा हाल बताया पर उस नीच को सोने चाँदी की कोई ज़्यादा परवाह नहीं थी वह तो बस अपना कूबड़ ठीक कराना चाहता था।

सो वह अपने दोस्त से बोला — "दोस्त, तुम मुझे यह क्यों नहीं बताते कि वह पेड़ कहाँ है? वे राक्षस वहाँ अब आने ही वाले होंगे। हो सकता है कि मैं भी तुम्हारी तरह से अमीर हो जाऊँ।

पर सबसे बड़ी बात तो मेरे लिये यह होगी कि अगर वे परियाँ मेरी भी कमर सीधी कर दें।"

दयालु लकड़हारे को अपने दोस्त पर दया आ गयी और वह इस बात पर राजी हो गया कि वह वैसा ही करेगा जैसा कि उसका दोस्त कह रहा था।

सो उस सुबह को जिस दिन वे राक्षस आने वाले थे वह दयालु लकड़हारा अपने दोस्त को ले कर उस पेड़ के पास गया। वह नीच दोस्त अपने दोस्त को बिना धन्यवाद दिये ही पेड़ पर चढ़ गया और राक्षसों और परियों के वहाँ आने का इन्तजार करने लगा।

परियों के आने से पहले धरती और चट्टाने काँपने लगीं जैसे पहले काँपी थीं और राक्षस लोग भी पेड़ के नीचे फिर पहले की तरह मिलने के लिये आ गये।

सबसे बड़ा राक्षस बोला — "दोस्तों, ऐसा लगता है हम लोगों में से कोई हमको धोखा दे रहा है। पिछले साल यहाँ से जाने के बाद किसी ने मेरे लोगों को अन्धापन ठीक कर दिया।

और क्योंकि केवल हम ही लोगों को उसका इलाज मालूम था जिसकी हमने एक साल पहले यहाँ बात की थी इसलिये मुझे यकीन है कि वह हम में से कोई एक ही है जिसने उनका अन्धापन दूर किया है।"

दूसरा राक्षस बोला — "वह मैं नहीं हूँ क्योंकि मेरे राज्य में भी लोग अब बात कर सकते हैं। उनका गूँगापन भी किसी ने ठीक कर दिया है।"

तभी तीसरा राक्षस गुस्से में भर कर बोला — "और वह मैं भी नहीं हूँ क्योंकि मेरे बहरे लोग भी अब सुन सकते हैं। एक लकड़हारा मेरे राज्य में आया और वह सबका इलाज कर गया।"

इस पर दूसरे दो राक्षस चिल्लाये — "फिर तो बस यह वही लकड़हारा होगा जिसने हमारे लोगों को ठीक किया है।"

तभी वहॉ पर परियॉ प्रगट हुईं। वे राक्षसों के डर को भूल गयी थीं। उन्होंने फिर अपना पुराना गाना गाना शुरू कर दिया –

सोमवार और मंगलवार और बुधवार तीन
गुरुवार और शुक्रवार और शनिवार छह

वह कुबड़ा जिसने परियों को आते देख लिया था उस गीत में कुछ जोड़ने के लिये बेचैन हो रहा था। उसको यह उम्मीद थी कि जब वह उनके गीत में कुछ जोड़ेगा तो वे खुश हो कर उसका भी कूबड़ ठीक कर देंगी।

सो जैसे ही उन परियों ने छह कहा उस कुबड़े के दिमाग में जो कुछ भी सबसे पहले आया वह चिल्ला पड़ा –

और रविवार सात

एक पल के लिये तो वे राक्षस और परियॉ ऐसे खड़े रह गये जैसे पत्थर की मूर्तियॉ खड़ी हों। पल भर के बाद जब उनको होश आया तो परियॉ बोलीं — "अरे इसने तो हमारा गीत ही खराब कर दिया।" कह कर वे सब परियॉ गायब हो गयीं।

उन भूतों ने भी इधर उधर देखा और चिल्लाये — "ओह तो वह धोखा देने वाला यह है।" कह कर वे पेड़ पर चढ़ गये और उस कुबड़े को पकड़ कर नीचे ले आये।

वे उससे बोले — "तो तुम हो वह धोखा देने वाले ओ छोटे मकड़े। तुम्हीं ने हमारे भेद खोले हैं। लो यह लो।"

कह कर उन राक्षसों ने उसकी कमर पर एक डंडा मारा जिससे उसकी कमर पर एक और कूबड़ बन गया।

वह कुबड़ा बेचारा अपनी जान बचा कर वहॉ से भाग लिया और अपने घर ही आ कर दम लिया। तो यह हुआ उसके नकल करने का फल।

5 सफेद फूल[23]

यह एक स्नो व्हाइट जैसी लोक कथा है जो उत्तरी अमेरिका के मैक्सिको देश में कही सुनी जाने वाली लोक कथाओं में से एक है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक रानी थी जो जितनी सुन्दर थी उतनी ही घमंडी थी। इस रानी के एक बेटी थी जिसका नाम था सफेद फूल जो बहुत सुन्दर थी और दिनों दिन और ज़्यादा सुन्दर होती जा रही थी।

अपनी सुन्दरता के घमंड को शान्त करने के लिये रानी के पास एक जादुई शीशा था जिससे वह रोज पूछती थी — "बता ओ शीशे बता, दुनियाँ में सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

और वह शीशा जवाब देता — "तुम हो रानी केवल तुम, रानी केवल तुम।"

जैसे जैसे साल बीतते गये सफेद फूल की सुन्दरता बढ़ती ही गयी। सो एक दिन जब रानी ने पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

---

[23] White Flower (Blanca Flor) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold and written by Sra Eva Rueda Fraire
[Author's Note : With but a few variations "Blanca Flor" is the story of Snow White. Its 38 versions have been reported in Spain only. Stith Thompson reports that the story of Snow White has not been found in the Americas except for one Portuguese version (*The Folktale,* pp. 124-125).
Three versions are found on the Mexican Border: one, "Blanca Flor"; two, a garbled story resembling the type of tale presented in "A Maiden Without Arms" more than Snow White; and three, a version of Grimm's tale.]

तो शीशा बोला — "सफेद फूल।"

रानी यह सुन कर आश्चर्यचकित रह गयी। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ तो उसने शीशे से दोबारा पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

शीशा फिर बोला — "तुम्हारी बेटी सफेद फूल।"

रानी बहुत ही बेरहम थी सो यह सुनते ही वह नाराज हो गयी। उसने निश्चय किया कि वह सफेद फूल को मरवा डालेगी। उसने अपने एक भरोसे के नौकर को बुलवाया जो अक्सर उसके ऐसे ही बुरे काम किया करता था।

उसने उस नौकर से कहा — "जुआन[24], सफेद फूल को मार डालो।"

नौकर आश्चर्य से बोला — "लेकिन महारानी....।"

रानी बोली — "बस एक शब्द भी नहीं। मैं चाहती हूँ कि कल सुबह ही तुम सफेद फूल को जंगल में ले जाओ और वहाँ ले जा कर उसे मार डालो। मुझे तुम्हारे काम का सबूत भी चाहिये।"

अगले दिन जुआन ने सफेद फूल से कहा कि वे लोग जंगल में फूल तोड़ने जायेंगे। सो दोनों जंगल की तरफ चल दिये।

जब वे जा रहे थे तो जुआन को राजकुमारी पर बहुत तरस आ रहा था। वह यह सोच ही नहीं सका कि वह उसको मार सकता था सो उसने सफेद फूल को सब कुछ बता दिया।

[24] Juan – name of the servant of the Queen

वह बोला — "मेरी राजकुमारी, तुम्हारी मॉ ने मुझे तुमको मारने का हुकुम दिया है। क्योंकि तुम हमेशा से ही मेरे साथ बहुत अच्छी रही हो इसलिये मैं तुमको कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता फिर भी अगर मैं तुम्हारी कोई निशानी लिये बिना घर लौटा तो रानी मुझे मरवा देगी।

इसके लिये मैंने एक तरकीब सोची है जिससे हम रानी को धोखा दे सकते हैं। तुम मुझको अपना एक कपड़ा दे दो। मैं एक खरगोश मारूँगा और उसके खून को तुम्हारे उस कपड़े पर लगा दूँगा और वह कपड़ा ले जा कर रानी को दे दूँगा।"

राजकुमारी यह सुन कर रो पड़ी और उसको बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जब जुआन ने यह सब कर लिया तो उसने राजकुमारी से कहा — "जाओ बेटी, अब तुम भगवान के सहारे हो।"

सफेद फूल ने जुआन को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वह जंगल में और आगे की तरफ चली गयी।

जब शाम हो गयी तो उसको रात में घूमने वाले जानवरों की आवाजें सुनायी देना शुरू हो गयीं। हर कदम पर उसका जंगली जानवरों का डर बढ़ता ही जाता था।

अचानक उसको दूर रोशनी दिखायी दी तो वह उस रोशनी की तरफ दौड़ी। जल्दी ही वह एक फूस की छत वाली झोंपड़ी के पास आ पहुँची।

राजकुमारी ने उस झोंपड़ी का दरवाजा खटखटाया पर अन्दर से कोई जवाब नहीं आया। उसने दरवाजा दोबारा खटखटाया पर फिर भी उसको उसका कोई जवाब नहीं मिला।

क्योंकि वह बहुत डरी हुई थी सो वह दरवाजा खोल कर अन्दर चली गयी। कमरे के बीच में एक मेज पर खाने पीने की चीज़ें लगी रखी थीं।

सफेद फूल बहुत भूखी थी सो वह मेज पर बैठ गयी। पहले उसने खाना खाया और फिर भगवान को धन्यवाद दिया। खाना खा कर उसको नींद आने लगी सो वह वहीं चूल्हे के पास लेट गयी और सो गयी।

यह झोंपड़ी डाकुओं के एक झुंड की थी। सुबह को जब वे घर लौटे तो यह देख कर बड़े आश्चर्य में पड़ गये कि उनके घर में एक सुन्दर सी लड़की चूल्हे के पास पड़ी सो रही थी।

उनके आने से जो शोर हुआ तो सफेद फूल की आँख खुल गयी। डाकुओं का सरदार बोला — "डरो नहीं ओ लड़की। हम तुमको कोई तकलीफ नहीं देंगे।"

और जो कुछ उसने कहा वही उसका मतलब भी था। उनका उसको किसी भी तरह की कोई तकलीफ देने का कोई इरादा नहीं था।

ये डाकू लोग दयालु थे। ये लोग केवल अमीरों को लूटते थे और वह लूटा हुआ पैसा गरीबों में बाँट देते थे।

जब सफेद फूल ने देखा कि वे डाकू दयालु हैं तो उसने अपनी मॉ की बेरहमी की कहानी उनको बता दी।

डाकुओं ने कहा — "तुम यहॉ हमारे पास आराम से रह सकती हो। हमको तो यह पहले से ही पता है कि रानी कितनी बेरहम है।

पर तुम उससे सावधान रहना। क्योंकि अगर उसको यह पता चल गया कि तुम यहॉ हमारे पास हो तो वह तुमको यहॉ भी मारने की कोशिश करेगी।"

इस बीच जुआन महल वापस पहुॅच गया। वहॉ जा कर उसने खून का धब्बा लगा राजकुमारी का कपड़ा रानी को दिखाया तो रानी को विश्वास हो गया कि जुआन ने राजकुमारी को मार दिया है।

वह इस सबूत को देख कर इतनी खुश हुई कि उसने जुआन को बहुत सारा इनाम दिया।

उस रात रानी फिर अपने जादुई शीशे से पूछा — "शीशे ओ शीशे बता सबसे सुन्दर स्त्री कौन है?"

शीशा फिर बोला — "तुम्हारी बेटी सफेद फूल।"

यह सुन कर तो फिर वह गुस्से से लाल पीली हो गयी। उसने तुरन्त ही अपने चौकीदारों को बुला कर उनसे जुआन को बुलाने के लिये कहा।

जुआन आया और बोला — "मगर महारानी जी....।"

पर इससे पहले कि वह अपनी बात पूरी करता रानी ने खुद ने उसको चाकू मार कर मार दिया। उस रात रानी सारी रात नहीं सो

सकी। वह यही सोचती रही कि वह कैसे सफेद फूल को ढूँढ कर उसे मार सकती थी।

रानी के पास एक जादुई क्रीम थी सो अगले दिन रानी ने उस जादुई क्रीम की सहायता से एक किसान स्त्री का वेश बनाया। इस वेश में अब उसको कोई पहचान नहीं सकता था।

फिर उसने चालाकी से बनाये गये एक चाँदी के डिब्बे में गले का एक जादुई सोने का हार रखा। जो कोई उस हार को पहनता तो वह तुरन्त ही गहरी नींद में सो जाता।

हार का वह डिब्बा ले कर वह महल से निकल पड़ी और जल्दी ही जंगल में आ गयी। जंगल में चलते चलते वह उस झोंपड़ी के पास भी आ गयी जिसमें सफेद फूल रहती थी।

वहाँ पहुँच कर रानी ने दरवाजा खटखटाया। जब उसने दरवाजा खटखटाया तो सफेद फूल उस समय बिल्कुल अकेली थी। सफेद फूल ने खिड़की से झाँक कर देखा तो उसको एक भली सी बुढ़िया नजर आयी।

यह सोचते हुए कि यह भली सी बुढ़िया उसका क्या बिगाड़ सकती है उसने दरवाजा खोल दिया। रानी बोली — "बच्चे, क्या तुम मुझको एक गिलास ठंडा पानी पिला सकती हो? मैं बहुत थक गयी हूँ और मुझे प्यास भी बहुत लगी है।"

सफेद फूल बोली — "हाँ हाँ, आओ अन्दर आओ।"

और भाग कर वह रसोई से पानी ले आयी। रानी ने पानी पिया और उसको धन्यवाद दिया।

फिर वह बोली — "बेटी, मैं अब चलूँगी पर क्योंकि तुमने मेरे साथ इतना अच्छा बरताव किया है इसके बदले में मैं तुमको यह सोने का गले का हार देना चाहती हूँ।"

राजकुमारी गले का हार लेते हुए और उसको अपने गले में पहनते हुए बोली — "धन्यवाद दादी माँ।"

जैसे ही उसने उस हार का कुंडा लगाया वह फर्श पर गिर पड़ी जैसे मर गयी हो। लड़की को वहीं छोड़ कर जहाँ वह गिर गयी थी रानी अपने घर वापस चली आयी।

शाम को जब वे डाकू घर लौटे तो उन्होंने देखा कि सफेद फूल तो मरी पड़ी है। उसको ज़िन्दा करने के लिये वे जो कुछ भी कर सकते थे उन्होंने किया पर उनकी सारी कोशिशें बेकार गयीं। वह ज़िन्दा नहीं हो पायी।

वे डाकू सफेद फूल को बहुत प्यार करते थे सो उन्होंने उसके लिये एक क्रिस्टल का ताबूत[25] बनाने का निश्चय किया ताकि वे उसे जब चाहें देख सकें।

[25] Crystal coffin

उन्होंने वैसा ताबूत बना कर सफेद राजकुमारी को उसमें लिटा दिया और उस ताबूत को एक गुफा में रख दिया। उन्होंने उस ताबूत को उस गुफा में इसलिये रखा था क्योंकि वह गुफा उनके घर के पास ही थी। अब वे रोज जा कर उसको देख सकते थे।

धीरे धीरे समय बीतता गया कि बारिश के एक दिन एक राजकुमार उसी गुफा में बारिश से बचने के लिये रुक गया जिसमें सफेद फूल का क्रिस्टल का ताबूत रखा हुआ था।

जब उसके नौकरों ने रोशनी के लिये मशालें जलायीं तो उन्होंने तो वहॉ एक ताबूत देखा। और उसमें देखी एक सुन्दर सी लड़की – सफेद फूल।

उसको देखते ही राजकुमार को उससे प्यार हो गया। उसने सोचा कि वह लड़की मर चुकी थी पर फिर भी उसने अपने नौकरों को उस ताबूत को अपने राज्य ले जाने का हुकुम दिया।

वहॉ पहुँच कर उसने एक बहुत ही सुन्दर चर्च बनवाया और सफेद फूल का वह ताबूत वहॉ रखवा दिया।

एक दिन उस चर्च का देखभाल[26] करने वाला बीमार पड़ गया तो चर्च की देखभाल करने के लिये उसकी मॉ वहॉ आयी। वह चोर थी सो जब उसने सफेद फूल के गले में वह सोने का हार देखा तो उसने उसको उसी समय चुराने का फैसला कर लिया।

[26] Translated for the word “Sexton”

बड़ी सावधानी से उसने सफेद फूल का वह गले का हार उसके गले से निकाल लिया। पर यह क्या? जैसे ही उसने उसके गले से वह हार निकाला बहुत ज़ोर से बिजली कड़कने की आवाज हुई और वह सफेद फूल जाग गयी।

मॉ यह देख कर बहुत डर गयी और वहॉ से भाग गयी। यह सब शोर सुन कर राजकुमार भी चर्च की तरफ भागा। वहॉ जा कर उसने देखा कि सफेद फूल तो अपने ताबूत में बैठी हुई है।

सफेद फूल ने भी जब राजकुमार को देखा तो उसको भी उस राजकुमार से प्यार हो गया। उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी बतायी तो राजकुमार अपनी सेना ले कर सफेद फूल की मॉ को सजा देने गया।

उसके बाद सफेद फूल और राजकुमार की शादी हो गयी और वे खुशी खुशी रहने लगे।

6 छोटा हरा खरगोश[27]

बहुत पहले की बात है कि एक राजा था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटे बहुत सुन्दर थे और वह अपने तीनों बेटों को बहुत प्यार करता था। पर इस राजा की एक बुरी आदत थी कि वह यह चाहता था कि सब उसके हुकुम को मानें।

एक बार वे तीनों राजकुमार राजा से पूछे बिना ही कहीं चले गये तो राजा इतना गुस्सा हुआ कि उसने उनको उनके ऊपर अपना जादू चला कर सजा दी। उसने अपने उन तीनों बेटों को छोटे छोटे खरगोशों में बदल दिया।

सबसे बड़े बेटे को उसने पिन्टो खरगोश[28] बना दिया। दूसरे बेटे को उसने सफेद खरगोश बना दिया और तीसरे बेटे को एक बहुत ही सुन्दर छोटे हरे खरगोश में बदल दिया।

इसके बाद उसने उनसे कहा — "सारे साल तुम लोग महल के बाहर नहीं जाओगे और केवल रात को ही आदमी की शक्ल में आ सकोगे।"

सो इसी तरह से समय गुजरता रहा।

---

[27] The Little Green Rabbit (El Conejito Verde) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from te Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Sra Teresa Zemora

[28] A species of rabbit – see its picture above.

एक दिन वे तीनों खरगोश महल के बागीचे में घास खा रहे थे कि हरा खरगोश बोला — "भाइयो, अब मैं इस ज़िन्दगी से तंग आ गया हूँ। मैं अब ऐसी ज़िन्दगी और नहीं सह सकता। चलो हम लोग इस पानी के पाइप से हो कर बाहर निकल कर देखते हैं कि इस जेल के चारों तरफ क्या है।"

दूसरे दोनों खरगोश थोड़े आलसी थे। इसके अलावा वे राजा से डरते भी थे इसलिये वे हरे खरगोश की बात मानना नहीं चाहते थे। पर हरे खरगोश ने उनसे इतनी जिद की आखिर उनको मानना ही पड़ा। सो वे तीनों वहाँ से बाहर निकल गये।

सारी दोपहर वे पहाड़ियों के ऊपर और घाटियों में भागते रहे। शाम को जब वे महल लौटे तो उन्होंने किसी को बड़ा मीठा सा ख़ुशी का गाना गाते सुना।

हरा खरगोश बोला — "चलो चल कर देखते हैं कि कौन गा रहा है।"

हालाँकि हरे खरगोश ने अपने भाइयों से भी चलने की बहुत जिद की फिर भी उसके भाइयों ने मना कर दिया और वे उसके साथ नहीं गये।

सो इस बार हरा खरगोश अकेला ही उस गाने वाले को ढूँढने चला गया। वह जिधर से गाने की आवाज आ रही थी उसी तरफ चल दिया तो एक बहुत ही सुन्दर महल के पास आ गया।

उसमें घुसने की उम्मीद में कि उसे कहीं उस महल में अन्दर घुसने का कोई रास्ता मिल जाये वह उस महल के बागीचे में चक्कर काटता रहा। आखिर उसको एक दीवार में एक छोटा सा छेद मिल गया और वह उसमें से हो कर अन्दर चला गया।

बिना आवाज किये धीरे से वह उस महल के बगीचे में पहुँच गया। वहाँ उसने देखा कि गाने वाला तो एक बहुत सुन्दर सी राजकुमारी थी। उसके बाल सुनहरे थे और ऑखें समुद्र जैसी नीली थीं। उस लड़की का नाम मैरीसौल[29] था।

बस हरा खरगोश तो उसको देखते ही उससे प्यार कर बैठा। अनजाने में ही वह उसके पास खिसकता चला गया। राजकुमारी ने जैसे ही उस खरगोश को देखा तो उसने तो एक बार में ही उसको पकड़ लिया।

उसको उठा कर वह अपने माता पिता के पास भागी उस छोटे से हरे खरगोश को दिखाने के लिये कि उसने कितना सुन्दर खरगोश पकड़ा है।

राजकुमारी के माता पिता अपनी बेटी को बहुत प्यार करते थे। दयालु होने के साथ साथ मैरीसौल उनकी अकेली बेटी भी तो थी न। खरगोश को अपने माता पिता को दिखा कर वह उसको अपने सोने के कमरे में ले गयी।

[29] Marisol – name of the princess

वह तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गयी जब उसने उस खरगोश को बोलते हुए सुना।

वह खरगोश बोला — "ओ सुन्दर राजकुमारी, मैं खरगोश नहीं हॅू। मैं तो एक राजकुमार हॅू जिसको मेरे पिता ने उनका हुकुम न मानने पर सजा के तौर पर जादू से खरगोश बना दिया है।

अगर तुम मुझे वापस नहीं जाने दोगी तो मेरे पिता राजा आज रात को ही मुझे मार देंगे। अभी तुम मुझे जाने दो और जैसे ही मेरी सजा का समय पूरा हो जायेगा मैं तुम्हारे पास वापस आऊॅगा और तुमसे शादी कर लॅूगा। विश्वास के रूप में तुम मेरी यह ॲगूठी रख लो।"

राजकुमारी तो खरगोश की यह सब बातें सुन कर आश्चर्य में पड़ गयी। पर क्योंकि वह बहुत दयालु थी और क्योंकि वह उस खरगोश से प्यार करती थी वह उसको बागीचे में ले गयी और उसको वहॉ ले जा कर छोड़ दिया।

खरगोश उछलता कूदता भाग गया।

महीनों गुजर गये पर खरगोश मैरीसौल से मिलने नहीं आया। कुछ समय और बीत गया तो मैरीसौल तो बेचैन होने लगी। वह इतनी ज़्यादा बेचैन हुई कि उसके माता पिता उसकी तरफ से परेशान हो गये।

इसलिये उन्होंने उसकी खुशी के लिये एक दावत का इन्तजाम किया। दूर दूर से उन्होंने गवैये और संगीतकार बुलाये कि हो सकता है कि वे ही उसके मनको खुश कर सकें।

पास के गॉव एक बूढ़ा रहता था। उसकी एक बेटी थी। वह बहुत अच्छा गिटार बजाती थी और बहुत सुन्दर गाने गाती थी।

जब उसने राजा का ऐलान सुना तो उस बूढ़े ने अपनी बेटी रोज़िटा[30] को राजकुमारी के सामने गाने के लिये ले जाने का विचार किया।

सो वह बूढ़ा और उसकी बेटी अपने छोटे से गधे पर सवार हो कर महल को चल दिये। बीच में वे उस शहर से गुजरे जहॉ वे खरगोश रहते थे।

रोज़िटा और उसके पिता को भूख लग आयी थी सो रोज़िटा महल के पास की एक बेकरी की दूकान की तरफ डबल रोटी लेने के लिये गयी।

इत्तफाक से उस समय उस दुकान वाले को गुस्सा आ रहा था क्योंकि उसी समय उसकी डबल रोटी जल गयी थी। सो उसने एक गोल डबल रोटी रोज़िटा की तरफ उछाल दी। रोज़िटा ने उसको पकड़ने की कोशिश की पर वह उसको पकड़ नहीं सकी।

---

[30] Rosita – name of the daughter of the old villager

वह गोल डबल रोटी नीचे गिर पड़ी और बेकरी की दूकान के दरवाजे के बाहर लुढकती हुई चली गयी। रोज़िटा उसके पीछे दौड़ी पर वह रोटी तो लुढ़कती ही गयी लुढ़कती ही गयी।

लुढ़कते लुढ़कते वह महल की एक दीवार में बने एक छेद में से होते हुए महल में चली गयी और जा कर वह एक बहुत ही सुन्दर सोने के कमरे के दरवाजे के पास जा कर रुक गयी।

वहीं वे तीनों खरगोश रहते थे और उसी कमरे में तीन बहुत सुन्दर पलंग बिछे हुए थे।

तभी रोज़िटा ने कुछ शोर सुना तो वह कमरे में लटके एक परदे के पीछे छिप गयी और उसके पीछे से झॉक कर देखने लगी। उसने देखा कि तीन खरगोश उस कमरे के अन्दर आये।

उनमें से एक पिन्टो खरगोश था, दूसरा एक सफेद खरगोश था और तीसरा एक छोटा सा हरे रंग का खरगोश था। पिन्टो खरगोश अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

इसी तरह से दूसरा सफेद खरगोश भी अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार में बदल गया और वह भी सो गया।

आखीर में वह तीसरा खरगोश भी अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा, एक बार करवट बदली और वह भी बहुत और बहुत सुन्दर राजकुमार बन गया।

पर यह आखिरी राजकुमार तुरन्त ही नहीं सो गया। वह रोने लगा। उसके रोने की आवाज सुन कर वे पहले दो राजकुमार जाग गये और उससे कहने लगे — "भाई□राजकुमारी मैरीसौल को भूल जाओ। पिता जी कभी तुमको उससे शादी करने की इजाज़त नहीं देंगे।"

कुछ देर बाद वे तीनों राजकुमार सो गये और रोज़िटा किसी तरह से वहॉ से उसी रास्ते से बाहर निकलने में कामयाब हो गयी जिस रास्ते से वह अन्दर आयी थी।

सुबह होने वाली थी सो रोज़िटा और उसके पिता मैरीसौल के गॉव चल दिये। वे दोनों महल आये और राजा से मिलने गये।

रोज़िटा ने राजकुमारी को नाच गा कर दिखाया पर वह उसको प्रभावित नहीं कर सकी। आखिर रोज़िटा बोली — "राजकुमारी जी, मैं आपको एक कहानी सुनाती हूॅ।"

उसके बाद रोज़िटा ने उसको वह सब सुना दिया जो उसके साथ रास्ते में हुआ था कि कैसे उसने तीन खरगोश देखे थे जिसमें एक हरा खरगोश भी था। फिर कैसे वे रात को आदमी बन गये थे।

यह सुन कर तो मैरीसौल बहुत खुश हो गयी और उसने अपने पिता से उस हरे खरगोश को देखने की इजाज़त मॉगी।

मैरीसौल के माता पिता इस तरह से उसको वहॉ जाने देना नहीं चाहते थे पर उसकी जिद के आगे उनकी एक न चली और उनको उसको वहॉ जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

रोज़िटा और मैरीसौल दोनों उस शहर चल दिये जहाँ वह हरा खरगोश रहता था।

जब वे दोनों महल की दीवार के छेद के पास पहुँचीं तो रोज़िटा ने मैरीसौल से कहा — "सुनो राजकुमारी जी, हम लोग वहाँ इस छेद में से हो कर जा रहे हैं। कोई शोर नहीं मचाना क्योंकि अगर राजा को पता चल गया तो वह हम दोनों को मार डालेगा।"

मैरीसौल बोली ठीक है और वे दोनों महल में दाखिल हुए। और उसी कमरे के पास पहुँच गये। कुछ देर बाद पिन्टो खरगोश आया। वह अपने पलंग पर कूद कर चढ़ गया। एक करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

उसके बाद एक सफेद खरगोश आया। वह भी कूद कर अपने पलंग पर चढ़ गया। एक करवट बदली और एक सुन्दर राजकुमार बन गया और सो गया।

आखीर में एक हरा खरगोश आया पर जब वह अपने पलंग पर कूद कर चढ़ा और करवट बदली तो मैरीसौल से नहीं रहा गया। वह एक हल्की सी चीख के साथ राजकुमार की तरफ दौड़ी।

राजा ने जो उस समय कमरे के आस पास ही टहल रहा था मैरीसौल की चीख सुनी तो राजकुमारों के सोने के कमरे की तरफ दौड़ा।

जब उसने वहाँ मैरीसौल को देखा तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसको मारना ही चाहता था कि सबसे छोटा राजकुमार बोला —

“ओ मेरे पिता और राजा, मैं इस लड़की से प्यार करता हूँ और मैं इससे शादी करना चाहता हूँ।”

अब तो राजा के गुस्से का कोई पारावार न रहा पर फिर भी उसको रोकते हुए वह राजकुमार से बोला — “हूँ, तो तुम इससे शादी करना चाहते हो। इसका मतलब है कि तुम आपस में एक दूसरे से मेरी बिना इजाज़त के पहले से ही मिल चुके हो।

इससे पहले कि तुम लोग शादी करो तुम लोगों को वह करना पड़ेगा जो मैं कहता हूँ।”

फिर वह हरे खरगोश से बोला — “तुमको सात साल तक और खरगोश बने रहना पड़ेगा।”

और मैरीसौल से बोला — “और तुम राजकुमार से तब तक शादी नहीं कर पाओगी जब तक कि तुम अपने ऑसुओं से ये सात बैरल[31] न भर दो और ये सात लोहे के जूते न फाड़ दो।”

बेचारे राजकुमार और राजकुमारी को हॉ कहना ही पड़ा क्योंकि उनके पास और कोई रास्ता ही नहीं था।

राजकुमार घुटनों के बल बैठ गया और राजा से प्रार्थना की और मैरीसौल ऑखों में ऑसू लिये हुए वहॉ से अपने लोहे के जूते फाड़ने चली गयी।

[31] Barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hooves.

बहुत देर तक चलते चलते और रोते रोते मैरीसौल एक घर के सामने आयी जहाँ चाँद रहता था। मैरीसौल ने तब तक अपने आँसुओं से सातों बैरल भी भर लिये थे और सातों लोहे के जूते भी फाड़ दिये थे।

पर वह बेचारी लड़की चलते चलते बहुत थक गयी थी और हरे खरगोश के महल से इतनी दूर थी कि वहाँ पहुँचने से पहले उसको कोई आराम करने की जगह चाहिये थी।

मैरीसौल ने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो चाँद बाहर निकला और राजकुमारी से पूछा — "लड़की, तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

मैरीसौल ने उसको अपनी कहानी सुनायी और उससे हरे खरगोश के घर तक पहुँचने में सहायता माँगी।

चाँद बोला — "देखो, इस समय मैं धरती के उस हिस्से में नहीं जा सकता जहाँ तुम्हारा हरा खरगोश रहता है। बल्कि मैं तो उधर कई दिनों तक नहीं जा सकता। पर तुम वह पहाड़ी देख रही हो न? मेरा दोस्त सूरज वहाँ रहता है। तुम उसके पास चली जाओ शायद वह तुम्हारी कुछ सहायता कर दे।"

मैरीसौल फिर चल दी और चलते चलते उस पहाड़ी पर आयी जहाँ सूरज रहता था। वहाँ आ कर उसने सूरज के घर का दरवाजा

खटखटाया तो सूरज ने दरवाजा खोला और उससे पूछा — “ओ लड़की, तुम यहाँ क्या कर रही हो?”

मैरीसौल बोली — “मैं हरे खरगोश की होने वाली पत्नी हूँ। मेहरबानी करके उसके महल तक पहुँचने में मेरी सहायता करो।”

सूरज ने उसको घूर कर देखा और फिर बोला — “तुम कहती हो कि तुम हरे खरगोश की होने वाली पत्नी हो। यह तो हो ही नहीं सकता क्योंकि हरे खरगोश की तो तीन दिन के अन्दर शादी होने वाली है।

राजा ने खुद उसकी होने वाली पत्नी चुनी है। सारे लोग मेरी प्रार्थना कर रहे हैं कि उस दिन मैं खूब ज़ोर से चमकूँ। वे सचमुच में ही यह चाहते हैं कि मैं उस दिन सारे दिन चमकूँ।”

मैरीसौल बोली — “मिस्टर सूरज, मेहरबानी करके मुझे उसके महल ले चलो।”

और फिर उसने उसके साथ जो जो हुआ था वह सब कुछ सूरज को बता दिया।

सूरज बोला — “देखो लड़की, मैं खुद तुमको वहाँ नहीं ले जा सकता क्योंकि अगर मैंने तुमको अपनी बाँहों में उठाया तो मैं तुमको जला दूँगा। पर हाँ, उस पहाड़ी के दूसरी तरफ मेरा दोस्त हवा रहता है। तुम उसको जा कर बोलो तुमको जहाँ जाना है। वह तुमको वहाँ ले जायेगा।”

सो मैरीसौल फिर चलते चलते उस पहाड़ी पर आयी जहाँ हवा रहता था और हवा के घर गयी।

वहाँ जा कर उसने हवा के घर का दरवाजा खटखटाया तो मिस्टर हवा की पत्नी ने दरवाजा खोला और बोली — "लड़की, अन्दर आ जाओ। तुम यहाँ क्या कर रही हो?"

मैरीसौल ने हवा की पत्नी को अपनी कहानी सुनायी। तभी अचानक हवा इतनी ज़ोर से हँसता हुआ घर आया कि उसकी हँसी से सारी जगह हिल गयी।

हवा की पत्नी ने उससे इतने ज़ोर से हँसने की वजह पूछी तो हवा ने बताया कि उसने हरे खरगोश और उसकी होने वाली पत्नी की शादी की सारी तैयारियाँ खराब कर दीं।

उसके बाद उसने मैरीसौल को देखा तो उससे पूछा कि वह लड़की कौन है और वह वहाँ क्या कर रही है। मैरीसौल ने उसको बताया कि उसके ऊपर क्या बीत रही है।

मिस्टर हवा बोला — "शायद इसी लिये हरा खरगोश चर्च में प्रार्थना कर रहा होगा। मुझे लगता है कि वह तुम्हारे लौटने की ही प्रार्थना कर रहा होगा। आओ, मेरी कमर पकड़ लो और पलक झपकने से पहले ही तुम उसके महल में होगी।

मैरीसौल ने हवा की कमर पकड़ ली और पल भर में ही वह हरे खरगोश के महल में थी। राजा भी वहीं पर था। उसने पूछा — "यह भिखारिन कौन है?"

पर हरे खरगोश ने मैरीसौल को पहचान लिया और तुरन्त ही उसकी तरफ चिल्लाते हुए दौड़ा — "ओह मेरी होने वाली पत्नी आ गयी, आखिर मेरी होने वाली पत्नी आ गयी।"

मैरीसौल ने राजा को सात बैरल ऑसू दिये और एक बड़े से रूमाल में बॅधे सात लोहे के फटे हुए जूते के बचे हुए हिस्से दिये।

क्योंकि राजा ने इसी के बाद दोनों की शादी का वायदा किया था सो दोनों की शादी हो गयी और वे खुशी खुशी रहने लगे।

7 क्लैमैन्सिया और जोस[32]

बहुत पहले की बात है कि मैक्सिको देश के किसी गाँव में एक पति पत्नी रहते थे जिनके एक बेटी थी जिसका नाम था क्लैमैन्सिया[33]।

क्लैमैन्सिया की माँ एक जादूगरनी थी और वह क्लैमैन्सिया को बिल्कुल भी नहीं चाहती थी। उसका कहना था कि क्लैमैन्सिया एक बहुत ही बेवकूफ लड़की है क्योंकि वह हमेशा चर्च ही जाती रहती है।

एक बार की बात है कि खेतों में फसल बहुत अच्छी हुई तो खेतों का काम बहुत बढ़ गया। उस बढ़ते हुए काम को सँभालने के लिये के क्लैमैन्सिया के पिता को अपनी सहायता के लिये एक नौजवान को काम पर रखना पड़ा।

उस नौजवान का नाम जौस था और वह उसकी फसल काटने में सहायता कर रहा था।

जल्दी ही क्लैमैन्सिया और जौस एक दूसरे से प्रेम करने लगे और चाहते थे कि जल्दी से जल्दी उनकी शादी हो जाये। जब

---

[32] Clemencia and Jose (Clemencia y Jose) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Sra Rayo Pinon-Rubi
[Author's Note : So far as I have been able to ascertain, "Clemencia y José" has not heretofore been recorded. That the tale itself is well known there is no doubt, since I have heard three variations very closely related to each other. It could, of course, be the outgrowth of another tale.]

[33] Clemencia – name of the daughter of the couple

उन्होंने क्लैमैन्सिया के पिता से शादी की इजाज़त मॉगी तो पिता ने तो उनको शादी करने की इजाज़त दे दी पर मॉ ने नहीं दी।

फिर भी क्लैमैन्सिया और जौस का प्यार आपस में बढ़ता ही गया और साथ में उस जादूगरनी का गुस्सा भी।

एक बार जब जौस क्लैमैन्सिया के पिता के खच्चरों की देखभाल कर रहा था तो क्लैमैन्सिया की मॉ ने उसको इस उम्मीद में मारने का निश्चय किया कि शायद जौस की मौत उन दोनों का प्रेम खत्म कर देगी और क्लैमैन्सिया को दुख पहुँचायेगी।

सो वह जादूगरनी अपने पति को ढूँढने गयी और उससे बोली — "ओ बूढ़े, इस जौस को घास के मैदान में भेज और इसको वहॉ से काला वाला खच्चर लाने के लिये बोल जो वहॉ चर रहा है।"

जब क्लैमैन्सिया ने अपनी मॉ की यह बात सुनी तो उसको लगा कि उसकी मॉ जौस को मारने के चक्कर में है।

वह तुरन्त जौस के पास दौड़ी गयी और उससे बोली — "मेरे पिता तुम्हारे पास आयेंगे और तुमसे घास के मैदान से काला खच्चर लाने के लिये और उसको बाड़े में रखने के लिये कहेंगे।

वह काला खच्चर मेरी मॉ होगी। अगर तुम उस पर चढ़ोगे तो वह तुमको उछाल देगी। और इस तरह से वह तुमको गिरा देगी और मार देगी।

इसलिये ध्यान दे कर मेरी बात सुनो जो अब मैं तुमको बताने जा रही हूँ। जब तुम उस खच्चर पर चढ़ोगे और वह तुमको

उछालने की कोशिश करे तो तुम आगे की तरफ झुक जाना और उसके दाँये कान को काट लेना।

इससे उसकी सारी ताकत चली जायेगी। फिर तुम उसको घर ला कर बाड़े में रख सकते हो। मगर ध्यान रहे यह बात तुम किसी से कहना नहीं।"

सारा कुछ वही हुआ जैसा क्लैमैन्सिया ने कहा था। सो जौस ने खच्चर को पहले बिना ताकत का कर दिया और फिर घर ला कर बाड़े में बाँध दिया।

जब शाम को खाने का समय हुआ तब जौस ने देखा कि वह बुढ़िया अपने दाँये कान पर जहाँ उसने उसको काटा था पट्टी बाँधे थी।

उसी रात जौस और क्लैमैन्सिया ने घर से भाग जाने का निश्चय कर लिया। उन दोनों ने तय किया कि रात को **11** बजे क्लैमैन्सिया जौस को उठायेगी और फिर वे दोनों वहाँ से भाग जायेंगे।

सो रात को **11** बजे क्लैमैन्सिया जौस के कमरे में उसको जगाने के लिये गयी।

उसने उसको हिला कर जगाया और बोली — "अपने बिस्तर पर थूको। मैं तो अपने बिस्तर पर थूक आयी हूँ। और बस फिर चलते हैं।"

सो जौस ने भी अपने बिस्तर पर थूका और उसके बाद वे वहाँ से चल दिये। कुछ देर बाद ही वह जादूगरनी जाग गयी और उसने

क्लैमैन्सिया को पुकारना शुरू कर दिया तो उसके बिस्तर पर पड़े थूक ने जवाब दिया "हॉ मॉ।"

वह बुढ़िया क्लैमैन्सिया की आवाज सुन कर सो गयी। काफी देर के बाद क्लैमैन्सिया की मॉ फिर जागी और उसने क्लैमैन्सिया को फिर पुकारा पर अब तक क्लैमैन्सिया का थूक सूख चुका था सो उसको उसके पुकारने का कोई जवाब नहीं मिला।

यह देख कर वह जादूगरनी बहुत गुस्सा हो गयी और क्लैमैन्सिया के सोने के कमरे में गयी। वहॉ उसको न पा कर वह तुरन्त ही जौस के सोने के कमरे में गयी। वहॉ उसको जौस भी कहीं दिखायी नहीं दिया।

अन्दाजा लगाते हुए कि क्या हुआ होगा उस जादूगरनी ने सुबह होने का इन्तजार किया। सुबह को उसने एक गरुड़[34] का रूप रखा

और उन दोनों नौजवानों को ढूँढने उड़ चली।

काफी देर तक उड़ने के बाद उसने उनको देख लिया। क्लैमैन्सिया ने भी उस गरुड़ को देखा तो वह तुरन्त पहचान गयी कि वह गरुड़ कोई साधारण गरुड़ नहीं था बल्कि उसकी मॉ थी।

[34] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

क्लेमैन्सिया ने अपनी माँ से काफी जादू सीख रखा था सो उसने एक कंघा जमीन पर गिरा दिया। कंघे के गिरते ही वहाँ पर एक बहुत घना और बड़ा जंगल पैदा हो गया।

वह गरुड़ उसके ऊपर से नहीं उड़ सकता था सो वह जमीन पर उतर आया और फिर से जादूगरनी का रूप रख लिया। क्लेमैन्सिया के जादू की काट करके उसने उस जंगल को गायब कर दिया और वह फिर से गरुड़ का रूप रख कर फिर से उन प्रेमियों को ढूँढने चल दी।

हालाँकि जौस और क्लेमैन्सिया इतनी देर में कुछ और दूर जाने में कामयाब हो गये थे पर फिर भी वह गरुड़ उनके पीछे था।

क्लेमैन्सिया ने उसको फिर से देख लिया तो अबकी बार उसने शीशा गिरा दिया। शीशे के गिरते ही वहाँ पर एक बहुत बड़ी झील बन गयी। वह झील इतनी बड़ी थी कि वह गरुड़ उसको भी पार नहीं कर सकता था।

सो उस बड़ी सी झील को देख कर उस गरुड़ को फिर से जमीन पर उतरना पड़ा। वह फिर से जादूगरनी बना और फिर से अपने जादू से उस झील को गायब किया।

अपने जादू से वह फिर से गरुड़ बनी और फिर उन दोनों के पीछे पीछे हो ली। गरुड़ को फिर से वे दोनों दिखायी दे गये।

इस बार गरुड़ को देख कर क्लेमैन्सिया ने एक मुट्ठी राख हवा में फेंक दी। इस राख ने बहुत घना कोहरा पैदा कर दिया। गरुड़ इस

कोहरे को भी पार नहीं कर सका क्योंकि उसको इस अँधेरे में कुछ दिखायी ही नहीं दे रहा था।

इसके अलावा अब सूरज डूब गया था और अँधेरा हो गया था और सूरज डूबने के साथ साथ उसकी जादू की ताकत भी खत्म हो गयी थी। सो अब वह जादूगरनी उनका पीछा नहीं कर सकती थी। इसलिये उसको अब घर लौटना पड़ा।

पर घर लौटने से पहले उसने उन दोनों को यह कहते हुए शाप दिया — "ओ नीच लड़की, याद रखना कि जैसे ही तू पहले गाँव में पहुँचेगी तो तेरा प्रेमी तुझको छोड़ जायेगा।"

क्लेमैन्सिया और जौस ने जादूगरनी की बातों पर कोई ध्यान नही दिया और बिना कहीं भी रुके वे चलते ही रहे।

आखिर वे एक गाँव में आ पहुँचे। क्लेमैन्सिया बहुत थक गयी थी सो जब वे गाँव के बाहर ही थे तो वह वहाँ आराम करने के लिये बैठ गयी। इसके अलावा इतना चलने के बाद उसके जूते भी फट गये थे।

जौस बोला — "तुम यहीं मेरा इन्तजार करो। मैं तुम्हारे लिये गाँव से एक जोड़ी नये जूते और कुछ खाने के लिये ले कर आता हूँ।"

क्लेमैन्सिया नहीं चाहती थी कि जौस उसको छोड़ कर कहीं जाये पर उसने इतनी जिद की कि वह उसको रोक नहीं सकी।

अँधेरा हो गया था और जौस अभी तक वापस नहीं आया था। दूसरा दिन भी बीत गया और जौस फिर भी नहीं लौटा। फिर उसको अपनी मॉ का शाप याद आया तो वह सारे रास्ते रोते हुए गॉव पहुॅची।

अपने प्रेमी को न पाने की वजह से क्लेमैन्सिया को काम करने जाना पड़ा। एक दिन जब वह रोज से ज़्यादा दुखी थी तो दो फाख्ताएॅ उड़ कर उसकी खिड़की पर आ बैठीं।

वहॉ बैठ कर वे गाने लगीं तो उनके गाने से ऐसा लग रहा था जैसे कि वे क्लेमैन्सिया को खुश करने की कोशिश कर रही हों। क्लेमैन्सिया ने उन दोनों फाख्ताओं को पकड़ लिया और उनको बहुत सारे करतब सिखा दिये।

इस तरह कई हफ्ते बीत गये। जब फाख्ताओं ने अपने करतब अच्छी तरह से सीख लिये तो क्लेमैन्सिया उनको उनके करतब दिखाने के लिये गॉव के चौराहे पर ले जाने लगी।

उनके करतब देखने के लिये बहुत सारे लोग आते थे और वे जो भी करतब करती थीं उनकी वे सब बड़ाई भी बहुत करते थे।

इस बीच क्लेमैन्सिया जौस को उन आदमियों की भीड़ में ढूॅढती रही कि शायद वह भी कभी वहॉ आ जाये। आखिर एक दिन उसको जौस दिखायी तो पड़ गया पर जौस ने उसको नहीं पहचाना।

तब उसने मादा फाख्ता को अपनी एक जादू की डंडी से छुआ तो वह नर फाख्ता के चारों तरफ यह कहते हुए गोल गोल चक्कर काटने लगी – "कुरुकुटकू कुरुकुटुकू, क्या तुमको याद है कि तुम मुझसे कहा करते थे कि तुम मुझको प्यार करते हो?"

नर फाख्ता ने जवाब दिया — "नहीं।"

मादा फाख्ता ने फिर पूछा — "क्या तुमको याद है कि हमने अपना घर क्यों छोड़ा था? क्या तुमको याद है कि तुम मुझे सड़क के किनारे छोड़ आये थे?"

नर फाख्ता बोला — "नहीं तो।"

मादा फाख्ता फिर बोली — "क्या तुमको याद है कि तुम मुझको इसलिये छोड़ कर गये थे क्योंकि तुमको मेरे लिये नये जूते लाने थे ताकि मैं उनको पहन कर गॉव जा सकूँ?"

नर फाख्ता बोला — "हॉ अब मुझे सब याद आ रहा है।"

जौस जो अब तक यह सब सुन रहा था अब बोला — "हॉ अब मुझे भी याद आ रहा है। तुम मेरी क्लैमैन्सिया हो।"

यह कहते हुए उसने क्लैमैन्सिया को अपनी बॉहों में उठा लिया और फिर बोला — "क्लैमैन्सिया, अब हम कभी अलग नहीं होंगे।"

उसके बाद उन्होंने शादी कर ली और वे बहुत साल तक खुशी खुशी रहे।

8 जूॅ की खाल का कोट[35]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक बेटी थी। एक दिन उस राजकुमारी की माँ उसके बालों में कंघी कर रही थी कि उनमें एक जूॅ निकल आयी।

राजकुमारी चिल्लायी — "देखिये पिता जी, मेरी माँ को मेरे सिर में से जूॅ मिली।"

राजा भी चिल्लाया — "उसे मारना नहीं। हम उसको एक शीशे के बरतन में रख देंगे। मैं यह देखना चाहता हूँ कि कोई जूॅ शाही खून पी पी कर कितनी बड़ी हो सकती है।"

सो राजा ने उस जूॅ को एक शीशे के बरतन में रख दिया और रोज वह उस जूॅ को अपनी बेटी का शाही खून पिलाता था। इस काम के लिये वह उसको अपनी बेटी की खाल पर घंटों चिपकाये रखता।

[35] The Louse-skin Coat (El Saco de Piojo) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Don Nicholas Martinez
[Author's Note : The story, "El Saco de Piojo," is a very simplified version of similar tales found in Europe and elsewhere. It seems that it is an original and complete tale since there is no evidence of its contamination with other stories.

That the basic story type is Oriental there is no doubt, proof being given in the fact that the reward is won through the answering of a riddle. In Europe, however, the tales similar to this have intermixed with others – from "The Pursued Maiden" types, as well as from "The Marvelous Companions" or "Grateful Animals" themes.]

खून पी पी कर वह जूँ काफी बड़ी हो गयी तो उसको किसी दूसरे बड़े शीशे के बरतन में रखना पड़ा। जब इसी तरीके से वह बढ़ती रही और एक दिन राजा को उसको एक बैरल[36] में रखना पड़ा।

राजकुमारी भी उसको अपना खून पिलाती रही और अब वह जूँ इतनी बड़ी हो गयी कि उसको राजा को टन[37] में रखना पड़ा। जब वह जूँ इतनी बड़ी हो गयी कि वह टन भी उसके लिये छोटा पड़ गया तो राजा ने उसे मरवा दिया।

राजा ने उसकी खाल को ठीक करा के उसका कोट बनाने के लिये अपने शाही दरजी को दे दिया। दरजी ने राजा के लिये उसका कोट बना दिया।

जब वह कोट बन गया तो राजा ने उसे पहना और फिर हर एक से एक ही सवाल पूछा — "क्या तुम बता सकते हो कि मेरा यह कोट किस जानवर की खाल का बना है?"

किसी ने कहा यह घोड़े की खाल का है, किसी ने कहा यह हिरन की खाल का है पर कोई भी उस सवाल का ठीक जवाब नहीं दे सका।

---

[36] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter. See its picture above.

[37] Tun – is a large cask especially for wine which has large capacity; especially one tun equal to 252 gallons.

आखीर में राजा ने यह घोषणा करा दी कि जो कोई भी इस सवाल का ठीक ठीक जवाब देगा वह अपनी बेटी की शादी उसी के साथ कर देगा।

सब जगह से लोग इस पहेली को बूझने के लिये वहाँ आये पर कोई भी ठीक ठीक नहीं बता सका कि वह कोट किस जानवर की खाल का बना हुआ है।

एक दिन एक पादरी अपनी भेड़ों के झुंड के साथ उस शहर में आया। वह अपनी भेड़ों को बाजार में बेचने के लिये ले जा रहा था पर उसको लगा कि इस काम को करते हुए वह बीच बीच में नयी जगह भी देख सकता था।

काफी देर चलने के बाद वह पादरी राजा के महल के पास आ पहुँचा। वह थका हुआ था सो उसने एक सिगरेट निकाली और राजा के बागीचे की दीवार के सहारे बैठ कर सिगरेट पीने लगा कि तभी उसने कुछ आवाजें सुनी।

राजा अपनी रानी से बात कर रहा था — "मुझे नहीं लगता कि दुनियाँ में कोई भी अन्दाजा लगा सकता है कि मेरा यह कोट जूँ की खाल का बना है। पर फिर हमारी बेटी की शादी कैसे होगी?"

जैसे ही उस पादरी ने यह सुना तो वह बहुत खुश हुआ और बोला — "अब मैं राजकुमारी से शादी कर सकता हूँ।"

अगले दिन वह राजा के महल में गया और राजा से मिलने की इजाज़त चाही। जब वह राजा के सामने गया तो बोला — "मैं आपके कोट की पहेली बूझने आया हूँ।"

राजा ने कहा — "ठीक है बताओ।"

पादरी बोला — "आपका यह कोट जूँ की खाल का बना हुआ है।"

यह सुनते ही राजा खुशी से चिल्ला पड़ा — "अरे तुमने ठीक पहचाना।"

कह कर राजा ने तुरन्त ही अपनी बेटी की शादी का इन्तजाम करवाया और वह पादरी राजकुमारी से शादी करके उसको तुरन्त ही वहाँ से ले गया।

इस तरह पादरी ने राजा की बेटी से शादी की।

9 राक्षस का भेद[38]

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसके एक बहुत ही बहादुर बेटा था। एक दिन उसका बेटा बोला — "पिता जी मैं दुनिया घूमने के लिये जाना चाहता हूँ।"

राजा उसको इस बात की इजाज़त नहीं देना चाहता था पर राजकुमार की जिद के आगे उसकी एक न चली और उसको अपने बेटे को दुनियाँ घूमने जाने की इजाज़त देनी ही पड़ी।

राजकुमार ने एक बहुत सुन्दर घोड़ा लिया और अपने सफर पर निकल पड़ा। चलते चलते वह बहुत दूर निकल गया। वह एक बहुत बड़े और घने जंगल के पास आ गया था जिसको उसको पार करना था।

वह उस जंगल में घुस गया तो उसने वहाँ एक हाउन्ड कुत्ते[39] और शेर की आवाजें सुनी और उसके बाद उसने चार जानवर देखे – एक शेर, एक हाउन्ड कुत्ता, एक चील और एक चींटी जो एक हिरन के ढाँचे पर आपस में बहस कर रहे थे।

---

[38] Giant's Secret (El Secreto del Gigante) – a folktale from Mexico, North America.
Adapted from the Web Site : http://www.g-world.org/magictales/
Adopted, retold by Don Genaro Fourzan
[Author's Note : "El Secreto del Gigante" belongs to that most popular group of tales known as the "Rescue from the Ogre" type. It is the story of "The Monster with His Heart in the Egg"

[39] Hound dog is a type of hunting dog

जैसे ही उन जानवरों ने राजकुमार को देखा तो शेर दहाड़ा — "एक पल रुको ओ। तुम देख रहे हो कि हम सब आपस में इस हिरन के ढाँचे के ऊपर बहस कर रहे हैं पर यह निश्चय नहीं कर पा रहे हैं कि इस मरे हुए हिरन का कौन सा हिस्सा किसका है। अगर तुम इसका ठीक से बँटवारा कर दो तो हम तुमको इनाम देंगे।"

राजकुमार राजी हो गया और उसने उस हिरन के ढाँचे के चार हिस्से कर दिये। शेर को उसने हिरन का पिछला वाला खूब माँस वाला[40] हिस्सा दे दिया। कुत्ते को उसने उसकी पसलियाँ दे दीं।

चील को उसने उसके अन्दर का हिस्सा यानी आँतें आदि दे दीं और चींटी को उसने हिरन का सिर खाने के लिये दे दिया।

चारों जानवर इस बँटवारे से बहुत खुश थे। शेर राजकुमार से बोला — "हमने तुमको इस बँटवारे के बदले में इनाम देने का वायदा किया था सो हम अपना वायदा जरूर निभायेंगे।"

उसने अपनी गरदन से एक लम्बा सा मोटा सा बाल तोड़ा और राजकुमार को देते हुए बोला — "लो मेरा यह बाल लो। जब भी तुम शेर बनना चाहो तो बस यह कहना "भगवान और शेर" और तुम एक शेर बन जाओगे।

फिर जब भी तुम फिर से आदमी बनना चाहो तो बस यह कहना कि "भगवान और आदमी" और तुम आदमी बन जाओगे।"

[40] Translated for the word "Hips"

इसी तरह हाउन्ड कुत्ते ने भी अपने शरीर से एक बाल तोड़ कर उसको दिया और बोला — "जब भी तुम हाउन्ड कुत्ता बनना चाहो तो बस यह कहना "भगवान और हाउन्ड" और तुम कुत्ता बन जाओगे और जब तुमको फिर से आदमी बनना हो तो कहना "भगवान और आदमी" और तुम फिर से आदमी बन जाओगे।"

चील ने राजकुमार को अपना एक पंख दिया और कहा कि जब भी उसको चील बनना हो तो वह कहे "भगवान और चील" और जब उसे वापस आदमी की शक्ल में आना हो तो कहे "भगवान और आदमी।"

चींटी ने राजकुमार को अपना एक आगे का बाल[41] दिया और कहा जब भी उसको चींटी बनना हो तो वह कहे "भगवान और चींटी" और जब वह फिर से आदमी बनना चाहे तो कहे "भगवान और आदमी"।"

राजकुमार ने उन सबको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया। चलते चलते एक दिन वह एक किले के पास आ गया। वह किला उसको ऐसा लगा जैसे उसमें कोई रहता न हो।

राजकुमार की इच्छा हुई कि वह उस किले को अन्दर से देखे पर उसके अन्दर जाना तो उसको बिल्कुल ही नामुमकिन लगा क्योंकि उसके चारों तरफ बहुत ऊँची और ठोस दीवार खड़ी हुई थी।

[41] Translated for the word "Antennae"

इस समय उसको उन चारों जानवरों के दिये हुए इनामों की याद आ गयी जो उसको उन्होंने हिरन का बॅटवारा करने के लिये जंगल में दी थीं।

उसने चील का दिया हुआ पंख निकाला और बोला "भगवान और चील"। तुरन्त ही वह एक चील बन गया और उड़ कर उस किले के ऊपर जा पहुँचा।

उसने उस किले की सबसे ऊँची मीनार की एक खिड़की खुली देखी तो वह उसकी तरफ उड़ा और उस खिड़की पर जा कर बैठ गया।

वह खिड़की एक सोने वाले कमरे की थी। उसने उस कमरे में अन्दर झाँका तो देखा कि बहुत सुन्दर लड़की एक पलंग पर सो रही है।

राजकुमार ने कहा "भगवान और आदमी" और वह अपने पुराने रूप में आ गया। आदमी बन कर वह उस लड़की को और अच्छी तरह से देखने के लिये उस कमरे में घुस गया।

वह लड़की जाग गयी और एक राजकुमार को अपने ऊपर झुका हुआ देख कर उससे बोली — "मिस्टर, तुम यहाँ क्या लेने आये हो? यह किला एक राक्षस का है अगर वह तुमको यहाँ देख लेगा वह तुमको बिना किसी रहम के मार देगा।"

राजकुमार बोला — "मैं किसी राक्षस वाक्षस से नहीं डरता क्योंकि मैं तो खतरों से खेलने के लिये ही निकला हूँ। पर जहाँ तक

मैं देख रहा हूँ तुम मुझे इस इतने बड़े किले में एक बन्दी दिखायी दे रही हो। अगर मैं तुम्हारी कोई भी सेवा कर सकता हूँ तो मुझे बताओ मैं उसे जरूर करूँगा।"

वह लड़की बोली — "तुम ठीक कहते हो। मैं उस राक्षस की बन्दी हूँ। परन्तु तुमसे सहायता माँगना तो बिल्कुल बेकार है क्योंकि वह राक्षस तो जो भी उससे लड़ने आता है उन सभी को हरा देता है।"

तभी अचानक किले में गरज की सी आवाज सुनायी पड़ी जो वहाँ चारों तरफ गूँज गयी। वह लड़की बोली — "हम तो मारे गये। वह राक्षस तो यहाँ अब कभी भी आ सकता है। और यहाँ तो कोई ऐसी जगह भी नहीं है जहाँ तुम छिप सको।"

राजकुमार बोला — "मिस, तुम डरो नहीं।" उसने जल्दी से चीटी का आगे वाला बाल निकाला और बोला "भगवान और चींटी" और वह तुरन्त ही एक चींटी बन गया।

उसी समय राक्षस वहाँ आ गया। वह उस लड़की से बोला — "मुझे यकीन है कि तुम किसी से बातें कर रही थीं।"

इतना कह कर उसने उस कमरे में चारों तरफ देखा पर जब उसे वहाँ कोई दिखायी नहीं दिया तो वह सन्तुष्ट हो कर वहाँ से चला गया।

राजकुमार ने फिर "भगवान और आदमी" कहा और वह फिर से आदमी की शक्ल में आ गया। वह लड़की तो उसको देख कर

इतनी खुश हुई कि खुशी के मारे उसके मुँह से कोई शब्द ही नहीं निकला।

जब वह कुछ होश में आयी तब वह राजकुमार से बोली।

उसने कहा — "मिस्टर, शायद तुम मुझे इस राक्षस से बचा सकते हो। पर इसके लिये तुमको इस राक्षस को मारना पड़ेगा। और उसको मारने से पहले तुमको वह अंडा तोड़ना पड़ेगा जिसमें राक्षस की जान रखी रहती है।

वह अंडा उसने बहुत अच्छी तरह से छिपा कर रखा हुआ है। कोई भी अब तक उस अंडे को ढूँढ नहीं पाया है।"

अगले दिन जब वह राक्षस उस लड़की के कमरे में आया तो लड़की ने उससे कहा — "जनाब, कल मैंने सपने में देखा कि आपकी ज़िन्दगी खतरे में है। एक आदमी उस अंडे को तोड़ रहा है जिसमें आपका भेद छिपा हुआ है।"

"तुम चिन्ता मत करो। मेरा वह अंडा बहुत अच्छी तरह से सुरक्षित रखा हुआ है। उसे कोई नहीं ढूँढ पायेगा।" राक्षस ने उसको विश्वास दिलाया।

राक्षस उस लड़की को विश्वास दिला कर वहाँ से तो चला गया पर उसके मन में अपनी जान की चिन्ता लग गयी। शायद उसकी जान वाकई खतरे में थी। पलक झपकते ही उसने एक कबूतर का रूप रखा और खिड़की के बाहर उड़ गया।

इस बीच राजकुमार राक्षस को बराबर देख रहा था। उसने तुरन्त ही चील का पंख निकाला और बोला "भगवान और चील"। वह तुरन्त ही चील बन गया और राक्षस के पीछे पीछे ही उड़ गया।

वह कबूतर एक गुफा में घुस गया और उसने एक बक्सा निकाल लिया जिसमें एक अंडा रखा हुआ था। इसी समय वह चील भी वहाँ आ पहुँचा।

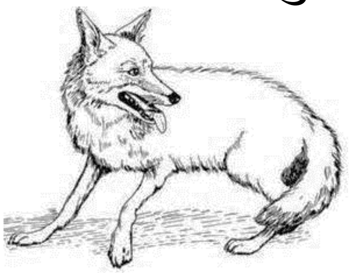

कबूतर ने जब चील को देखा तो वह एक कायोटी[42] में बदल गया और उस अंडे को निगल गया। अंडा निगल कर वह वहाँ से भाग गया।

राजकुमार ने तुरन्त ही शेर का दिया हुआ उसकी गरदन का बाल निकाला और बोला "भगवान और शेर"। यह कहते ही वह शेर में बदल गया और कायोटी के पीछे भाग चला।

उसके बाद राक्षस कायोटी से एक खरगोश में बदल गया और जा कर एक छोटी सी झाड़ी में छिप गया जहाँ शेर उसका पीछा न कर सके।

अब राजकुमार ने कुत्ते का दिया हुआ बाल निकाला और बोला "भगवान और कुत्ता" और वह तुरन्त ही कुत्ता बन गया। अब उस ने खरगोश का पीछा करना शुरू किया।

---

[42] Coyote (pronounced as "Kaa-yo-tee") is a small desert wolf and is the hero of many Native American folktales. Read many folktales in the book "Chalak Kaayotee-1" by Sushma Gupta in Hindi language.

खरगोश को लगा कि अब तो वह पकड़ा जायेगा सो वह फिर से कबूतर बन गया। राजकुमार भी कुत्ते से चील बन गया और चील ने कबूतर को पकड़ लिया और उसको मार कर अपने पंजों में दबा कर जमीन पर उतर आया।

जमीन पर ला कर उसने उसका पेट फाड़ डाला। उसके पेट से अंडा निकाल कर उसने अपनी चोंच की एक ही मार से उसको तोड़ डाला। जैसे ही वह अंडा टूटा वहाँ मरे हुए कबूतर की जगह मरा हुआ राक्षस पड़ा था।

अब वह चील वापस किले में उड़ आया और उस लड़की के सोने के कमरे में पहुँचा और बोला "भगवान और आदमी"। तुरन्त ही वह चील राजकुमार में बदल गया।

राजकुमार बन कर उसने उस लड़की को अपनी बाँहों में ले लिया। अब उनको राक्षस का कोई डर नहीं था सो उन दोनों ने शादी कर ली और उस उजाड़ किले को चहचहाते रंगीन किले में बदल दिया।

10 जुआन अल हैवन[43]

एक बार की बात है कि एक लड़का था जिसका नाम था जुआन अल हैवन, यानी आलसी जुआन। उसको काम से सख्त नफरत थी। वह सारे दिन घर में इधर उधर लेटा रहता और खुजाता रहता।

एक दिन उसकी मॉ ने कहा — "जुआन चलो उठो और जा कर कुछ काम ढूँढो और घर में कुछ पैसे लाओ।"

सो जुआन उठा और घर के बाहर सड़क पर चल दिया। पहला आदमी उसको एक स्त्री मिली जिससे उसने काम के लिये पूछा। वह स्त्री एक फर्नीचर स्टोर चलाती थी सो वह बोली कि "ठीक है मैं तुमको अपने फर्नीचर स्टोर में काम दे दूँगी।"

वह स्त्री उसको अपने स्टोर में ले गयी और उससे कहा — "तुम तब तक इस शो रूम की सफाई करो तब तक मैं ज़रा शहर से कुछ और सामान ले कर आती हूँ।"

---

[43] Juan El Huevon – a folktale from Mexico, North America. Adapted from the Book : The House Between Earth and Sky: Harvesting New American Folktales. By Joseph Daniel Sobol. NH: Teacher Ideas Press. 2005.
Available at the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=1VEDzERYb6gC&pg=PA118&lpg=PA118&dq=cat+teaches+all+tricks+but+one+story&source=bl&ots=eEO5k_m5h0&sig=BFaCzndz2H2bZ1I-8UmyhFtCJmQ&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwiri6nE-rfQAhWG3oMKHZiTBMkQ6AEIOzAF#v=onepage&q=cat%20teaches%20all%20tricks%20but%20one%20story&f=false

उसका मतलब था कि जुआन उसके शो रूम की सफाई करे उसका फर्श पर पोंछा लगाये और उसके फर्नीचर को पौलिश करे। पर जब वह स्टोर से चली गयी तो जुआन ने उस शो रूम का सारा फर्नीचर दूकान के पिछले दरवाजे से बाहर फेंक दिया।

जब वह स्त्री शहर से वापस आयी और उसने देखा कि जुआन ने क्या किया तो उससे पूछा — "यह मेरा फर्नीचर बाहर क्या कर रहा है।"

जुआन बोला — "आप ही ने तो कहा था कि यह शो रूम साफ कर दो।"

स्त्री गुस्से से बोली — "तो क्या शो रूम ऐसे साफ करते हैं? चले जाओ यहाँ से। तुमको नौकरी से निकाला जाता है।"

जुआन दुखी हो कर अपने घर चला गया। घर पहुँच कर उसने अपनी माँ को बताया कि वहाँ क्या हुआ था तो माँ बोली — "मुझे इस सबसे कोई मतलब नहीं है पर तुम यहाँ पर बिना कुछ करे धरे नहीं रह सकते। जा कर शैतान के लिये काम करो पर ध्यान रहे कि वह तुमको काम से पहले ही पैसे दे दे।"

जुआन की माँ ने तो सोचा कि वह यह सब उससे मजाक में कह रही है पर जुआन को यह मजाक समझ में नहीं आया। सो वह फिर घर के बाहर चल दिया। उसने पहाड़ जाने वाली सड़क पकड़ी और शैतान को ढूँढने चल दिया ताकि वह उसके लिये काम कर सके।

वह बहुत दूर नहीं गया था कि उसको एक आदमी मिला जिसके सारे कपड़े काले थे। उसके सिर पर एक चौड़े से किनारे का टोप था और वह एक काले घोड़े पर सवार था।

शैतान ने पूछा — "मैंने सुना है कि तुम कोई काम ढूढ रहे हो।"

जुआन ने पूछा — "क्या तुम शैतान हो? मेरी माँ ने कहा है कि मैं तुम्हारे लिये काम करूँ पर तुमको मुझे काम से पहले ही पैसा देना पड़ेगा।"

शैतान ने अपने घोड़े पर लटके हुए थैले को खोला और उसमें से एक सोने से भरा थैला निकाला। वह थैला उसको देते हुए वह बोला — "लो यह थैला अपनी माँ को दे देना और चलो फिर मेरे साथ चलो।"

जुआन ने वह थैला लिया और अपने घर दौड़ गया। वहाँ जा कर उसने वह भारी थैला अपनी माँ को दिया और कहा — "माँ जैसा तुमने मुझसे कहा था मैंने शैतान को काम से पहले ही पैसे देने को राजी कर लिया।

कह कर वह उलटे पैरों शैतान के पास दौड़ गया जहाँ वह उसका इन्तजार कर रहा था। वह शैतान के पीछे उसके घोड़े पर बैठ गया और वे दोनों नरक की तरफ चल दिये।

जब वे उस शैतान के घर पहुँचे शैतान जुआन से बोला — "मुझे अभी काम पर वापस जाना है और मेरे आठ बच्चे स्कूल में हैं

तो यह समय मेरे खाने के कमरे की मेज और कुरसियाँ साफ करने के लिये अच्छा है सो तुम मेरे खाने के कमरे की मेज और कुरसियाँ साफ कर दो।"

और शैतान जुआन को घर में अकेला छोड़ कर अपने काम पर चला गया।

जुआन ने शैतान की आलमारियों में साबुन ढूँढा तो उसको एक जगह एक सफेद रंग की कोई चिकनी सी चीज़ मिल गयी। उसने सोचा कि वह साबुन था सो उसने उसे पानी में घोला और शैतान के खाने के कमरे की बढ़िया मेज कुरसियों पर उँडेल दिया।

फिर उसने उनको मला और मला पर उससे वह सफेद चिकनी चीज़ उन मेज कुरसियों से छूट ही नहीं पायी। वह थक हार कर लेट गया अैर सो गया।

जब जुआन वहाँ सो रहा था तभी शैतान के आठों लड़के स्कूल से घर आ गये। उन्होंने कुछ खाना लिया और खाने की मेज पर आ कर उसे खाने बैठ गये।

पर जैसे ही उन्होंने अपनी बाँहें मेज पर रखीं वे तो वहीं चिपक गयीं। वे उनको उठा ही नहीं सके। फिर उन्होंने अपनी कुरसी से उठने की कोशिश की तो वे तो कुरसी से भी नहीं उठ सके।

ऐसा इसलिये हुआ क्योंकि जुआन ने शैतान का फर्नीचर साफ करने के लिये साबुन की बजाय गोंद के घोल का इस्तेमाल कर लिया था।

जब शैतान काम से घर वापस आया तो उसने देखा कि उसके आठों बेटे रो रहे हैं अैर चिल्ला रहे हैं। उनके हाथ मेज से चिपके हुए हैं और उनकी पीठ कुरसी के तकिये से चिपकी हुई है।

शैतान ने जुआन को घर में ढूँढा तो वह तो शान्ति से रसोईघर के एक कोने में पड़ा सो रहा था। शैतान उसको देखते ही चिल्लाया — "यह सब तुमने क्या किया? निकलो यहॉ से। तुमको इस नौकरी से निकाला जाता है।"

सो जुआन फिर अपने घर चला गया पर क्योंकि उसने शैतान को अपने काम करने से पहले ही पैसा देने के लिये तैयार कर लिया था इसलिये अब उनके पास जिन्दगी भर के लिये खाने और रहने के लिये खूब पैसा था।

सो अब जुआन अल हैवन को कोई काम करने की जरूरत ही नहीं थी।

11 छिपकली ने हिरन को दौड़ में कैसे पछाड़ा[44]

बहुत पुरानी बात है कि जंगल के राजा ने एक बार जंगल के सारे जानवरों को बुलाया और कहा — “मेरे बच्चों मैं तुम लोगों की एक दौड़ रखना चाहता हूॅ। मैं देखना चाहता हू कि तुम सबमें कौन सबसे तेज़ दौड़ता है।”

यह सुन कर सारे जानवर चिल्लाये — “यह तो बहुत अच्छा है। यह तो बहुत अच्छा है। चलो वह जो पेड़ उस सड़क के किनारे खड़ा है वहॉ तक दौड़ते हैं।”

राजा बोला — “तुम्हारा विचार तो बहुत अच्छा है। जो कोई जीतेगा मैं उसको एक दुनियॉ का सबसे सुन्दर टोप[45] दॅूगा।”

जानवर फिर चिल्लाये “ओह सुन्दर टोप। ओह सुन्दर टोप।”

पर जब बड़ा हिरन वहॉ दौड़ के लिये आया तो सबके चेहरे लटक गये क्योंकि कोई भी उस तेज़ दौड़ने वाले हिरन के साथ दौड़ने के लिये तैयार नहीं था।

---

[44] How a Lizard Beat Big Deer – a folktale from Mexico, North America. Adapted from the Web Site : http://www.uexpress.com/tell-me-a-story/2015/6/14/wheeeeeeai-a-haitian-folktale By Mike Lockett

[45] Translated for the word “Somberero”. It is a straw hat which Mexicans often wear – see its picture above.

सिवाय एक नर छिपकली[46] के।

नर छिपकली बोला — "अगर तुम सब लोग इस बड़े हिरन से डरते हो तो मैं उसके साथ दौड़ूँगा।"

इस पर सारे जानवर हँस पड़े — "यह कैसे दौड़ेगा इस बड़े हिरन के साथ। इसकी तो टाँगें ही बहुत छोटी सी और अजीब सी हैं।"

नर छिपकली बोला — "हम अजीब से छोटे जानवर जमीन के बिल्कुल पास रहते हैं और अगर हम गिर भी जायें तो हम बहुत दूर नहीं गिरते।

मैं इस बड़े हिरन के साथ दौड़ने से बिल्कुल नहीं डरता। तुम लोग देखना कि इनाम का यह टोप मैं ही जीतूँगा चाहे फिर मुझे वह अपनी पीठ पर ही क्यों न पहनना पड़े।"

यह सुन कर जानवर फिर हँस पड़े।

पर जंगल का राजा नहीं हँसा। वह बोला — "माना कि नर छिपकली छोटा है पर कम से कम वह डर तो नहीं रहा है।"

उसने उठ कर मिट्टी में एक डंडी से एक लाइन खींची जहाँ से दौड़ शुरू होनी थी और बोला — "आओ जिस जिसको दौड़ना हो

---

[46] Translated for the word "Lizard". Actually lizard is not a particular animal but a species of reptiles and is found in all continents except in Antarctica in many shapes, sizes and colors and represent many kinds of reptiles, such as crocodile is also a kind of lizard so it is difficult to translate this word in Hindi. In this context since it has to stick to the tail of the deer, it should be a Chhipkali or a Girgit. Since Girgit has an English word "Chameleon" for it, it was thought proper to translate it here as Chhipkali.

वह यहाँ आ कर इस लाइन के पीछे नर छिपकली और बड़े हिरन के साथ खड़ा हो जाये।

पर वहाँ केवल दो ही जानवर खड़े थे। एक तो नर छिपकली और दूसरा बड़ा हिरन। दौड़ शुरू होने से पहले नर छिपकली बोला — "दौड़ शुरू होने से पहले मैं कुछ कहना चाहता हूँ।

जंगल के राजा ने पूछा — "हाँ हाँ कहो। वह क्या।"

"मैं यह कहना चाहता हूँ कि जब दौड़ शुरू हो तो सब जानवर अपनी अपनी आँखें बन्द कर लें।"

जंगल का राजा बोला — "ठीक है। सब लोग अपनी अपनी आँखें बन्द कर लो अब मैं एक दो तीन गिनता हूँ।"

और फिर वह बोला — "एक, दो, तीन..."

दौड़ के शुरू होने की गिनती बोलने के बाद जब जानवरों ने अपनी अपनी आँखें खोलीं तो उनको सड़क पर केवल धूल का उड़ता हुआ बादल ही दिखायी दिया।

उस बादल में बड़े हिरन को तो भागते हुए तो सबने देखा पर किसी को वह छोटा नर छिपकली कहीं दिखायी नहीं दिया। सबने सोचा कि वह बेचारा नर छिपकली तो धूल में कहीं दब गया होगा।

जंगल के राजा ने हवा में एक कूद लगायी और वह एक ही कूद में सड़क के किनारे लगे उस पेड़ के पास पहुँच गया जहाँ वह दौड़ खत्म होनी थी।

वहाँ जा कर वह उस पेड़ की छाँह में खड़ा हो गया और जीतने वाले का इन्तजार करने लगा जिसको आ कर वहाँ बैन्च पर बैठना था।

जंगल का राजा तो बड़े शौक से दौड़ देख रहा था और दूसरे जानवर पीछे से उठता हुआ केवल धूल का बादल देख रहे थे जो उनसे दूर और दूर और पेड़ के पास और पास तक चलता चला जा रहा था।

उनको लग रहा था कि वे बड़े हिरन को तो देख पा रहे थे पर नर छिपकली उनको कहीं दिखायी नहीं दे रहा था। उन्होंने सोचा बेचारा नर छिपकली कहीं धूल में दब गया होगा।

वे ऐसा सोच ही रहे थे कि इतने में ही बड़ा हिरन उस पेड़ के नीचे आ पहुँचा। बड़े हिरन ने देखा कि जंगल का राजा तो वहाँ पहले से ही एक बहुत सुन्दर टोप लिये बैठा हुआ है।

बड़ा हिरन बैन्च पर बैठने ही वाला था कि उसको किसी की छोटी सी आवाज सुनायी पड़ी — "मेहरबानी करके मेरे ऊपर नहीं बैठना। मैंने तुमसे कहा था न कि मैं ही दौड़ में जीतूँगा और देखो मैं यहाँ हूँ। मैं जीत गया।"

बड़ा हिरन तो यह देख कर आश्चर्य से भर उठा "यह कैसे हुआ। यह नर छिपकली कैसे जीत गया।"

वह तो एक शब्द भी न बोल सका और शरमिन्दा हो कर वहाँ से तुरन्त ही भाग गया।

क्या तुमने कभी यह देखा है कि हिरन जैसे ही किसी को अपने पास खड़ा देखते हैं तो वे वहाँ से तुरन्त ही भाग लेते हैं? पर आज तो वह नर छिपकली से दौड़ में हार चुका था।

जैसे ही दूसरे जानवर बड़े हिरन को देख सके तो वे उसको दौड़ में जीतने की बधाई देने के लिये पेड़ के पास आये पर उन्होंने तो देखा कि वहाँ तो नर छिपकली अपनी पीठ पर सुन्दर टोप पहने बैठा हुआ है।

उसको वहाँ बैठा देख कर वे भी आश्चर्य में पड़ गये। पर वह तो बैन्च पर बैठा दिखायी दे रहा था सो किसी को किसी शक की कोई गुंजायश ही नहीं थी।

क्योंकि वह सुन्दर टोप नर छिपकली को अपने शरीर पर थोड़ा सा कष्ट दे रहा था इसलिये जंगल के राजा ने उसकी पीठ पर कुछ लाल रंग की बूँदें बना दीं ताकि सबको यह मालूम रहे कि किस तरह से उस नर छिपकली ने बड़े हिरन को दौड़ में हराया था।

अब केवल जंगल का राजा ही जानता है कि नर छिपकली ने बड़े हिरन से यह दौड़ कैसे जीती थी – बड़े हिरन की पूँछ से लटक कर और उसे कस कर पकड़ कर।

बस जब वह बड़ा हिरन बैन्च पर बैठने के लिये घूमा और बैन्च पर बैठने ही वाला था कि उस छोटे नर छिपकली ने उसकी पूँछ छोड़ दी और दौड़ जीतने के लिये बैन्च पर बैठ गया। तो यह था नर छिपकली के बड़े हिरन से दौड़ में जीतने का राज़।

तो यह कहानी है छोटे से नर छिपकली के बड़े हिरन को दौड़ में हराने की और उसकी अपनी पीठ पर लाल रंग की बूँदें पाने की।

12 क्विन्स पहाड़ियों की मुर्गी[47]

यह कहानी मैक्सिको के मिचुआकान के ज़ीनापीक्यूआरो शहर[48] में रहने वाली एक मुर्गी और उसकी सात नौकरानियों की है।

बहुत दिनों पहले यहाँ टाराज़्का इन्डियन्स[49] रहा करते थे जो पहाड़ियों में रहते थे। उस पहाड़ी पर आज तक भी बहुत सारे क्विन्स के फूलों वाले पेड़[50] होते है।

टाराज़्का लोगों को डर था कि जब वहाँ स्पेन के लोग रहने आ जायेंगे तो वे उनका खजाना लूट कर ले जायेंगे सो उन्होंने उस पहाड़ी की तलहटी में एक पिरैमिड बना दिया। और अपना सारा खजाना उस पिरैमिड में रख दिया।

---

[47] Juan El Huevon – a folktale from Mexico, North America. Adapted from the Book : The House Between Earth and Sky: Harvesting New American Folktales. By Joseph Daniel Sobol. NH: Teacher Ideas Press. 2005.
Available at the Web Site :
https://books.google.ca/books?id=1VEDzERYb6gC&pg=PA118&lpg=PA118&dq=cat+teaches+all+tricks+but+one+story&source=bl&ots=eEO5k_m5h0&sig=BFaCzndz2H2bZ1I-8UmyhFtCJmQ&hl=en&sa=X&ved=0ahUKEwiri6nE-rfQAhWG3oMKHZiTBMkQ6AEIOzAF#v=onepage&q=cat%20teaches%20all%20tricks%20but%20one%20story&f=false

[48] In the town of Zinapecuaro of Michoacan in Mexico. Mexico was colonized in 1521.

[49] Tarazka or Tarascan Indians

[50] Quince is a flowering tree that bears a pome fruit, similar in appearance to a pear, and bright golden-yellow when mature. Throughout history the cooked fruit has been used as food, but the tree is also grown for its attractive pale pink blossoms and other ornamental qualities – see the picture of a blossom branch with pink flowers above.

वहीं एक राजकुमारी रहती थी जो अपने लोगों की मरजी के खिलाफ स्पेन के रहने वाले एक कैप्टेन के प्रेम में पड़ गयी। उसके पिता ने उसको बहुत मना किया कि वह उन सफेद लोगों के पास न जाये उनसे न मिले जुले पर वह नहीं मानी और कैप्टेन ह्यूगो विलाडीगो से प्यार करने लगी।

उसके पिता ने उसको इसकी सजा दी और उसको उस पिरैमिड में बन्द कर दिया। वह वहीं दुख से मर गयी।

अब हुआ यह कि एक मुर्गी अपने सात बच्चों के साथ हर गुड फ्राइडे[51] को अपने घर से निकल कर उस पिरैमिड के पास आती थी। असल में यह राजकुमारी अट्ज़िम्बा और उसकी सात नौकरानियॉ[52] थीं जिनको उसके पिता ने सजा दी थी।

लोगों का कहना था कि जो कोई भी उस मुर्गी और उसके सातों बच्चों को पकड़ लेगा वह उस पर डाला हुआ जादू तोड़ देगा और पिरैमिड में रखे हुए खजाने का मालिक बन जायेगा।

पर इससे पहले उसको उन सब मुर्गियों को उस पहाड़ी से शहर के बीच में बने चर्च तक ले कर जाना होगा ताकि सैनौर क्यूरा[53] जो वहॉ का बड़ा पुजारी है उन सबको अपना आशीर्वाद दे सके।

---

[51] Good Friday is a Christian’s day falling in around the month of April. On this day Jesus Christ was crucified.

[52] Princess Atzimba and her seven maids

[53] Senor Cura

यह कहानी आगे यह कहती है कि एक बार एक गरीब आदमी गुड फ्राइडे के दिन उस मुर्गी और उसके सातों बच्चों को पकड़ने में कामयाब हो गया। उसने उन सबको एक थैले में डाला और फिर वह थैला अपने कन्धे पर लटका कर शहर की तरफ चर्च को चल दिया।

जब वह चलने लगा तो उसने अपने पीछे से आती हुई एक आवाज सुनी — "मुझे चर्च ले चलो और पीछे मुड़ कर मत देखना। कोई भी तुमको ऐसा करने के लिये कितना भी कहे फिर भी तुम पीछे मुड़ कर मत देखना।"

सो वह आदमी चर्च की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको जो भी मिला वही उससे बोला — "अरे देखो तो तुम क्या ले जा रहे हो और और आगे मत जाओ इसे यहीं फेंक दो।" या फिर वे उससे डर कर भाग गये।

पर वह आदमी चलता ही रहा और उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा। वह उस पहाड़ी से चर्च की तरफ करीब तीन मील ही चला होगा और वह चर्च के पास तक ही पहुँचने वाला ही था कि रास्ते में उसको एक स्त्रियों का झुंड मिला जो उसी की तरफ आ रहा था चिल्लाया — "अरे देखो तो तुम अपने कन्धे पर लाद कर क्या ले जा रहे हो?"

इस बार वह अपने आपको नहीं रोक पाया। वह घूमा और उसने पीछे मुड़ कर देखा तो उसके थैले में तो एक पंखों वाला सात सिर का सॉप था।

उसको देखते ही वह आदमी तो सदमे से मर गया।

उधर वह सॉप भी वहॉ से निकल कर क्विन्स के पेड़ों की पहाड़ी की तरफ चला गया।

उसके बाद की कहानी यह है कि कोई भी उस मुर्गी और उसके सात बच्चों को अभी भी वहॉ आते देख सकता है और कोई भी उसको अभी तक पकड़ कर उनको चर्च से आशीर्वाद नहीं दिलवा पाया।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com
1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com
1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com
1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।
1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**